

मैं गीत सुनाता जाऊँगा

गीतकार

वल्लभेश दिवाकर

प्रकाशक

प्रगति पथ प्रकाशन

१४, शिवठाकुर गली

कलकत्ता—७

प्रकाशक
शिवशंकर किराड़
प्रगति पथ प्रकाशन
१४, शिवठाकुर गली
कलकत्ता—७

आवरण शिल्पी—प्रह्लाद आचार्य
प्रथम आवृत्ति—११ अगस्त १९६३
मूल्य ५ रुपये

मुद्रक—
रैफिल आर्ट प्रेस
३१, बड़तल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता—७
३३-७९२३, ३३-६१६८



सुर एवं शब्द साधना के

प्रतीक श्रद्धेय

आचार्य बृहस्पति

को

समर्पित

भूमिका

लड़खड़ाते है कदम तो क्या हुआ ग़म नहीं इसका कि मञ्जिल दूर है
ग़म मेरे दिल मे है तो इस बातका आदमी क्यों आदमी से दूर है।
जो कवि इस भाव भूमि मे पला हो व सर्वदा—

नवीन विश्व के लिये नवीन रक्त दान दे
मैं आदमी बना रहा मैं आदमी बना रहा।

वह गीत गाता हो उस गायक का नाम है 'बल्लभेश दिवाकर'! भाई बल्लभेश दिवाकर ने' निर्द्वन्द, द्वन्द के बीच समन्वय दीप जलाने की कामना से प्रेरित होकर "मैं गीत सुनाता जाऊंगा" के गीतों की रचना की है। ऐसा आपके प्रथम गीत से ज्ञात होता है।

हर मन की आशा नगरी में
विश्वास भरी सुर लहरी में
किरणों से प्रेरित होता मैं मृदु बीन बजाता जाऊंगा
निर्द्वन्द, द्वन्द के बीच समन्वय दीप जलाता जाऊंगा
मैं गीत सुनाता जाऊंगा।

इन पक्तियों का स्रष्टा ही अगर कहे—मैं गीताञ्जलि का मधुर छन्द तो उपयुक्त लगता है। अन्यथा आज तक तो गुरुदेव रवीन्द्र की गीताञ्जलि के छन्दों में सबने ओजस्विता के ही दर्शन किये है।

आजस्विता मे मधुरता की अनुभूति उसी स्थिति में उत्पन्न हो सकती है जब व्यक्ति ओजस्विता को आत्मसात् करले, कथनी और करणी के भेद को भंग करदे। स्वयं को अन्तहीन अनुभव करने लगे। जीवन को अनुराग व आस्था से ओत-प्रोत रखे।

संग्रह की सभी रचनायें जिस उद्देश्य विशेष से प्रभावित होकर

प्रस्फुटित हुई है उस उद्देश्य से सीधा सम्बन्ध स्थापित करने के लिये प्रथम गीत, मैं, और मैं अन्तहीन ये तीन रचनायें उपयुक्त हैं, यह मेरी मान्यता है।

वल्लभेशजी की रचनायें आदर्शवाद, यथार्थवाद के बीच के पथ से गुजरती हुई प्रगतिवाद के मैदान में खड़ी होकर प्रयोगवाद को सम्बोधित करती हैं।

रचना शिल्प प्राचीन होते हुए भी रोचक है। भाषा उर्दू संस्कृत मिश्रित उद्बोधक है। राष्ट्रीय एवं मानवीय तत्वों से अभिभूत होकर 'वल्लभेशजी ने ये गीत विश्वव्यापी अभ्युदय की पृष्ठभूमि पर खड़े होकर गाये है अतः निसन्देह उद्देश्यपूर्ण प्रयास के द्योतक हैं।

त्रिवेदी हाउस —व्रजेन्द्र गौड़

१६ वां रास्ता खार, बम्बई ५२ २४-७-६३



कुछ अपनी भी

जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये।
इसलिये बस जी रहा हूँ, गीत गाने के लिये ॥

मेरे अन्तर में उद्वेलित उपरोक्त भावना ने 'नई वाणी' को जन्म दिया। अनुकूल मौसम मिलने के कारण उसे फूलने फलने का मौका मिला। प्रथम प्रयास की सफलता ने इस नये संग्रह को आपके समक्ष रखने की हिम्मत दी। यह कैसा है इसका निर्णय मैं क्यों करूं? ...

—वल्लभेश दिवाकर

अनुक्रमणिका

कविता		पृष्ठ
१—मैं गीत सुनाता जाऊंगा	......	१
२—गाता रहूंगा	......	२
३—प्यार के दिये जलाता हूं मैं	......	३
४—दो क्षण मन बहलादे	......	६
५—हर घर मेरे मन का मन्दिर	......	७
६—प्यार मुझसे है तो जलना सीखले	......	९
७—दर्द माँगते चलो	......	१०
८—रे तड़प रे मन !	......	१२
९—लो संकल्प !	......	१३
१०—कब तक कोई दूर रहेगा	......	१४
११—साथी चल रे	......	१५
१२—जीवन पथ पर	......	१६
१३—जागो जीवन जाता है	......	१७
१४—दीप जलो	......	१८
१५—मैं भी गाऊं तू भी गा रे	......	२०
१६—गीत गाने के लिये	......	२२
१७—कटुता के पथ पर	......	२३
१८—साथी यह कैसी ऋतु आई	......	२४
१९—आदमी क्यों आदमी से दूर है	......	२५
२०—अलग अलग न चल	......	२६
२१—अभी अन्धेरा पास रे	......	२७
२२—मैं तो दीप जलाऊंगा	......	२८
२३—मैं एकाकी नहीं चलूंगा	......	३०
२४—मेरा गीत	......	३१

२५—मेरा गीत	......	३३
२६—हर कदम पर नया गीत लिखता हूं मैं	......	३५
२७—मैं आदमी बना रहा	......	३६
२८—एक ठोकर और खाने दे मुझे	......	३७
२९—मैं अन्त हीन	......	३९
३०—मैंने जीना सीख लिया है	......	४१
३१—दीपक सदा जलेगा	......	४४
३२—कहां गये	......	४५
३३—बोलो जय जय भारती	......	४६
३४—मत दीप जलाओ दीवारों पर	......	४७
३५—घर घर घी के दीप जलाओ	......	४८
३६—जाने क्यों तुम आते मेरे पास नहीं	......	५०
३७—गरीब !	......	५१
३८—देखो सावन सूख न जाये	......	५२
३९—ओ उठ आवाज दे	......	५४
४०—नये मनुष्य	......	५५
४२—मैं तुम्हें फिर से नया इतिहास दूंगा	......	५६
४३—आग बर्फ में लगी खून से बुझायेंगे	......	५७
४४—मेरा हिन्दुस्तान	......	६०
४५—देश निराला	......	६२
४६—तुम्हें कह रही है तुम्हारी कहानी	......	४६
४७—तुम मुझे पुकारते रहो	......	६५
४८—चाह इतनी है	......	६७
४९—मुस्कान एक भी जो	......	६८
५०—आओ पनघट ढूंढें	......	६९
५१—तुम मुझे तूफ़ान दो	......	७०
५२—दुनिया को जी भर कर देदे प्यार प्रिये	......	७१
५~—प्राप्ति	......	७३

५४—मैं	... ...	७४
५५—आंगन आंगन तुम्हें पुकारे	... ...	७८
५६ - नाम हमारा है दुनिया की जीत के	......	७९
५७ – सपूत	......	७०
५८—जब तक मैं जिन्दा हूँ	... ...	८१
५९—जब जब मन व्याकुल होता है	......	८२
६०—विश्वास नही जिसका खुद पर	......	८३
६१—होली के रंगों से	.. ...	८४
६२—मेरी धरती	.....	८७
६३ – समान गान	. ..	८८
६४—कविता सुहागिनी	......	८९
६५—मैं निराकरण	.... . .	९०
६६—मुक्तक माला	......	९१
६७—दो पत्र	... ..	९३

मैं गीत सुनाता जाऊंगा

हर मन की आशा - नगरी में
विश्वासभरी सुर - लहरी में
किरणों से प्रेरित होता मैं, मृदु बीन बजाता जाऊंगा
मैं गीत सुनाता जाऊंगा

मैं गंगा, यमुना, सतलज औ' रावी की आशा का गायक
मैं अमर अजन्ता, एलोरा, औ' ताजमहल का परिचायक
मैं गीतांजलि का मधुर छन्द, मैं राजघाट का अभिनायक
निर्द्वन्द - द्वन्द के बीच समन्वय - दीप जगाता जाऊंगा
मैं गीत सुनाता जाऊंगा

संशय की धरती से आगे, आगे, आगे बिल्कुल आगे
जो गीत मैं गाये जाता हूं, ये गीत वहीं पर हैं जागे
जब - जब जन्मे ये गीत अटल निश्चय के थे बाजे बाजे
इसलिये मैं अपने गीतों की लय और बढ़ाता जाऊंगा
मैं गीत सुनाता जाऊंगा

गाता रहूंगा

जब गाने चला हूँ तो गाता रहूंगा
जो सूझेगा मुझको सुनाता रहूंगा
अपनी और से तो जमाने को सारे
आवाज दे-दे बुलाता रहूंगा

जो सोये है उनको जगाता रहूंगा
जो रूठे है उनको मनाता रहूंगा
दिये प्यार के नित जलाता रहूंगा
तार सांस के झन-झनाता रहूंगा

उमङ्गों की गंगा बहानी है मुझको
प्रपञ्चों की गठरी डुबानी है मुझको
मेरी चाह है, मैं बनूं अग्रगामी
अतः चोट पहली खानी है मुझको

प्रहारों को प्रतिभा दिखानी है मुझको
प्रहारों को गर्दन झुकानी है मुझको
जगानी है मुझको दमकती जवानी
रवानी को शोभा बढ़ानी है मुझको

मेरे साथ चलती बहारों की मस्ती
मेरे साथ चलती सितारों की बस्ती
मुझसे मांगती है किश्तियां—किनारा
सुहाती नहीं है मुझे बात सस्ती

छुपाये न छुपता, है वह प्यार मेरा
मिटाये न मिटता, वह आधार मेरा
पराया मैं समझूं, किसको बताओ !
खुद को सब में देखूं, यह अधिकार मेरा

मैं पूछे बिना ही बताता रहूंगा
कोई आये न आये, मैं बुलाता रहूंगा
गले में सभी को लगाता रहूंगा
मन्त्र मित्रता के सुनाता रहूंगा

समर्पण की स्मृतियां जगानी है मुझको
विसर्जन की कृतियां मिटानी है मुझको
प्रदर्शन की मदिरा कौन पी सकेगा
स्वदर्शन की रुचियां बढ़ानी है मुझको

सृजन सभ्य हो, सभ्य हो हर इशारे
चमकने लगे आदमी बन सितारे
सहारे की चाहत किसी को भी क्यूं हो
तरंगों को चूमे, चलके खुद किनारे

मैं हक सब को अपना दिखाता रहूंगा
व्यथायें पुरानी भुलाता रहूंगा
कहेगा मुझे कौन, यह कर तू वह कर
स्वयं फर्ज अपना निभाता रहूंगा

जब गाने चला हूं तो गाता रहूंगा
गाता रहूंगा गाता रहूंगा

प्यार के दिये जलाता हूं मैं

कदम-कदम पर पल-पल छिन-छिन, प्यार के दिये जलाता हूं मैं
यह मत पूछ जमाने मुझसे, क्या खोता क्या, पाता हूं मैं

चमक रहा हूं बन ध्रुव - तारा
मैं मानव जीवन के पथ पर
यही लिये विश्वास बैठ कर
चलता मैं सावन के रथ पर

कोई जलता जले, मुझे क्या, कोई छलता छले, मुझे क्या ?
मैंने तो सीखा है गाना, अपनी रीत निभाता हूं मैं
प्यार के दिये जलाता हूं मैं

हर आंगन को मैं वृन्दावन—
समझ रहा था, समझ रहा हूं
हर आनन को मैं शिव - आनन
समझ रहा था, समझ रहा हूं

कोई जाने या ना जाने, कोई माने या ना माने
रूठ-रूठ कर जो जीते हैं, उनको सदा मनाता हूं मैं
प्यार के दिये जलाता हूं मैं

मंजिल मेरी मुझे मनाती
गीत नये नित गा - के सुनाती
जो मैं चाहूं वह दे जाती
मैं दीपक तो है यह वाती

हर वियोग को मिलन दे रहा, हर प्रयोग को चरण दे रहा
देकर भजन, भजन को नव स्वर सोये प्राण जगाता हूं मैं
प्यार के दिये जलाता हूं मैं

दो क्षण मन वहला दे, मैं वह गान नहीं हूं

प्रिय मुझ को अपने मन की आखो से देखो
दो क्षण मन वहला दे, मैं वह गान नही हू !

मैंने निर्झर से मन-वीन वजाना सीखा
मैंने किरणो से मन-दीप जलाना सीखा
गिरि-उर से मैंने फौलादी दिल पाया है
धरती के अन्तर से दर्द भुलाना सीखा
वाह्य न मेरा सुन्दर हरगिज हो सकता है
देखो, मैं कल्पित कोई भगवान नही हू !
दो क्षण मन वहला दे, मैं वह गान नही हूं !

डग छोटे है और है लम्बी मंजिल मेरी
कदम - कदम पर महा - परीक्षण शंख वजाता
झुलस - झुलस कर, गिर - गिर कर, फिर उठता हू मैं
फिर भी प्रतिक्षण महापरीक्षण प्राण जलाता
क्षणिक सुखो के आगे अपना शीश झुका दूं—
मैं इतना कलुषित, इतना नादान नहीं हूं !
दो क्षण मन वहला दे, मैं वह गान नही हूं !

[मैं गीत सुनाता जाऊंगा

मेरे हल्के वसन देख मत घबराओ तुम
मेरा उजड़ा सदन देख मत घबराओ तुम
प्यार है मुझ से तो मेरी आंखों में देखो
पहचानो मुझको, दुख से मन घबराओ तुम
मेरा धन, गीतों का धन है, सोचो-समझो
मैं चांदी सोने वाला धनवान नहीं हूं !
दो क्षण मन बहला दे, मैं वह गान नहीं हूं !

किसको कहूं, हृदय की उद्वेलित दो बातें
किसको कहूं, तड़पती हैं मेरी सौगातें
किसको कहूं, व्यथित मेरी चाहों का चन्दा
हार रहा है धोते-धोते काली रातें
छल के शोले घेर रहे हैं कदम-कदम पर
घबरा जाये उनसे, मैं वह प्राण नहीं हूं !
दो क्षण मन बहला दे, मैं वह गान नहीं हूं !

मुझको मरघट में जल कर जिन्दा रहना है
मुझको जब तक दुनिया है, जिन्दा रहना है
मुझको जीना है, जीवन आसान बनाना
मुझको है शैतानों को इन्सान बनाना
मेरी नजरों में मन्दिर-मस्जिद धोखा है
मैं चेतन को कुचले वह पाषाण नहीं हूं !
दो क्षण मन बहला दे, मैं वह गान नहीं हूं !

हर घर मेरे मन का मन्दिर

हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन-जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

चाह है मेरी, हर मानव की अभिलाषा पूरी करदूं
परिभाषा कुछ बदल, मिलन की दूर सकल दूरी करदूं
मन मे मेरे, मेरे साथी, एक यही अरमान है
हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन-जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

चाह है मेरी जग में, ना कोई मेरा इतिहास बने
चाह है मेरी धरती पर हर ऋतु मे मृदु मधुमास मने
हर साथी के उन्नतपन मे ही मेरा उत्थान है
हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन-जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

राह है मेरी वह जिसके, आंचल में छुपा सवेरा है
जहाँ उदय अंगड़ाई लेता, मेरा वहीं बसेरा है
जिसमें हर मन की हो धड़कन, प्रिय मेरा वह गान है
हर घर मेरे मन का मन्दिर, हर जन - जन भगवान है
हर मन की मुस्कान ही मेरे जीने का सामान है

प्यार मुझसे है तो जलना सीखले

प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले!
प्यार मुझसे है तो मरना सीख ले!
मैं तुम्हें दूंगा हमेशा मुश्किलें
तू उन्हें आसान करना सीख ले!

फूल मैं अपने निकट रखता नहीं
ताज मेरे शीश पर है शूल का
छत्र नभ है औ' दिशायें वस्त्र हैं
बिस्तरा रखता हमेशा धूल का
रोटियां शायद मिले या ना मिले
ठोकरों से पेट भरना सीख ले!
प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले!

कण्ठ में मेरे सुरीला स्वर नहीं
लोचनों में एक रूखा प्यार है
दिल में शायद ठौर तुम भी पा सको
क्योंकि इस पर विश्व का अधिकार है
चाह है अधिकार की यदि कुछ तुम्हें
मुझसे तू व्यवहार करना सीख ले!
प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले!

भेंट में दूंगा तुम्हें कुछ दर्द ही
धन यही तो एक मेरे पास है!
दर्द जिसमें है नहीं वह नर नहीं
एक चलती और फिरती लाश है
दर्द जिसमें है नहीं वह प्यार क्या?
दर्द पीकर मुस्कराना सीख ले!
प्यार मुझसे है तो जलना सीख ले!

मैं गीत सुनाता जाऊंगा]

दर्द मांगते चलो

दर्द मांगते चलो ! दर्द मांगते चलो ! दर्द ही महान है !
दर्द की ही कील पर टिका हुआ जहान है !

दर्द मे छुपे हुए अनन्त ज्योति-पुञ्ज है
दर्द के रचे हुए सभी महल-निकुञ्ज है

दर्द अन्धकार है, दर्द ही प्रकाश है
दर्द रात का तिमिर, प्रभात का विकास है

दर्द-हीन जिन्दगी का नाम जिन्दगी नहीं
दर्द-हीन बन्दगी का नाम बन्दगी नहीं

दर्द ने जिसे छुआ, वही महान हो गया
जहाँ तिमिर घिरा, वही सुखद विहान हो गया

जो दर्द को पियूष मान मुस्करा के पी गये
वे मृत्यु से डरे नहीं, मसान जा के जी गये

न उनका तन कफन के तन्तुओं में बन्द हो सका
जली चिता, उठा धुआं, न उनका अन्त हो सका

अगर न हो यकीन, पूछलो जरा कबीर से
गगन से पूछ लो, या पूछ लो सरल समीर से

सुनो सितार-तार आज किसके गीत गा रहे ?
वियोगिनी थी कौन वह न जिसको हम भुला रहे ?

क्यों पूजते हैं आज हम शहीद के मजार को ?
दुलारते है आज हम क्यों झोपड़ों के द्वार को ?

डरो न बाह्य देखकर, हंसो न रूप देखकर
सदा सभी के अन्तराल को संवारते चलो !
दर्द मांगते चलो, दर्द मांगते चलो !

तड़प रे मन

रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

सांस को क्यों सोपता चलता है तू फिर याचना
आस को नश्वर खिलौने, प्यास को कटु वासना
कामना जन्मी नहीं है क्षुद्र दर्शन के लिये
रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

चल रहा, करता इकट्ठे क्यूं तू कलुषित आवरण
कर रहे क्रन्दन तुझे ही देख तेरे आचरण
मत उठा घन संशयों के क्षुब्ध गर्जन के लिये
रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

जानता हूं प्राप्त कर लेगा प्रदर्शन से तू मान
किन्तु खो देगा समुज्ज्वल भावनाओं का विहान
मिन्नतें मांगेगा जग तेरे विसर्जन के लिये
रे तड़प रे ! मन तड़प ! केवल समर्पण के लिये
कह दिया किसने, तुझे तू है प्रदर्शन के लिये

लो संकल्प !

लो संकल्प ! आज से ही लो !
सह-चिन्तन का, सह-गुंजन का
सह-वन्दन सह-अभिनन्दन का

एकाकीपन पुनः किसी आक्रामक दल को उकसायेगा
संचित सकल धैर्य का हिमगिरि गल आयेगा, ढल जायेगा
स्वप्न न होगा पूर्ण कभी फिर, चिर-चिन्तित जन-मन-रंजन का
लो संकल्प ! आज से ही लो ! सह-चिन्तन का, सह-गुञ्जन का
सह-वन्दन, सह-अभिनन्दन का

आक्रोशों की ज्वाल रक्त को कहां उष्णता दे पायेगी
आत्म-निरीक्षण से पौरुष की चमक - दमक कुछ बढ़ पायेगी
सत को ढूंढो, सत को चाहो, श्रम स्वीकारो मति-मन्थन का
लो संकल्प ! आज से ही लो ! सह-चिन्तन का, सह-गुञ्जन का
सह-वन्दन, सह-अभिनन्दन का

किरणों की पगडण्डी ढूंढो, यदि सच्चे पूरब वाले हो
आलोकित दलबन्दी ढूंढो, यदि सच्चे नौपत वाले हो
ये क्यों भूले, ले बैठे हो, ठेका तुम भव-भय-भंजन का
लो संकल्प ! आज से ही लो ! सह-चिन्तन का, सह-गुञ्जन का
सह-वन्दन, सह-अभिनन्दन का

कब तक कोई दूर रहेगा

कब तक कोई दूर रहेगा, अगर लगन की रेख प्रबल है

आज नहीं तो कल उसको—
नूपुर झनकाते आना होगा
स्वयं तुम्हारी शुष्क वाटिका—
को, आकर सरसाना होगा
तथ्य अधूरा नहीं चिरंतन ध्रुव-सा ज्योतिर्मान अटल है
कब तक कोई दूर रहेगा, अगर लगन की रेख प्रबल है

माना आज दूर वह तुम से
और वहीं इठलाता होगा
मगर न सोचो यह कि तुम्हारा
ध्यान न उसको आता होगा
साधक के शब्दों की ताकत से अब तक तुम अनजाने हो
इसीलिये हर स्वप्न विफल है, इसीलिये हर यत्न विफल है
कब तक कोई दूर रहेगा, अगर लगन की रेख प्रबल है

साथी चल रे !

चल रे ! साथी चल रे !
चल रे ! साथी चल रे !

पूर्व दिशा में खड़ा उदय का साथी तुझे बुलाता
किरणों के रथ पर चढ़ तव पथ पर अमृत बरसाता
चरण बढ़ा मन-नयन खोलकर, लगन लिये उज्ज्वल रे !
चल रे ! साथी चल रे !

अलसाये फूलों की शैया से क्या प्रीत लगाना
फल ना देकर हरे प्राण उसमें क्या नेह लगाना
चरण पतन का छोड़ चयनकर उन्नति का उज्ज्वल रे !
चल रे ! साथी चल रे !

जीवन पथ पर

मन का ब्याह बुद्धि से रचकर
जीवन-पथ पर चरण धरो रे !

निष्ठा के वट को सींचो रे, लिये साधना की जलधारा
छांव मिलेगी शीतल, फल भी तुम्हें मिलेगा प्यारा-प्यारा
रीती झोली विश्वासों की गहरे पानी पैठ भरो रे !
जीवन-पथ पर चरण धरो रे !

आँखों की कालिख धो डालो, ज्ञान का अंजन लगा-लगा कर
प्राणों की पीड़ा धो डालो, प्रीति की गंगा बहा-बहाकर
चिन्ता-गुहा भेद कर उर्मिल स्मिति-सागर के तीर तरो रे !
जीवन पथ पर चरण धरो रे !

जागो ! जीवन जाता है

रात-दिवस-घटि-पल के पंखों पर बैठा
जागो ! जीवन जाता है

ज़िद्दी मन को साथी मेरे, समझा लो
बहके मन को साथी मेरे, समझा लो
मैं जो गाता गीत नियन्त्रण के प्रतिपल
आओ, मेरे साथ जरा तुम भी गा लो

सपनों का आकाश-कुसुम इस दुनिया में
कहाँ किसी को बोलो तो मिल पाता है ?
जागो ! जीवन जाता है

व्यर्थ गया हर-पल भय का उत्पादक है
भोले - भाले अन्तर का उन्मादक है
साधक बन हर पल को व्यर्थ न जाने दो
अर्थ को अपने मन अनर्थ - पथ पाने दो

सीपी के उर में मोती मुस्काते हैं
पल के पहलू में हीरक ढल जाता है
जागो ! जीवन जाता है

दीप जलो !

जग - मग - जग - मग
जग - मग - जग - मग
आलोकित करने
मम-दग मग, ओ मेरे मानस मन्दिर के दीप जलो !
दीप जलो !

आधी रात है
झंझावात है
घिरा घटाओं—
से प्रभात है
व्याकुल धरती
व्याकुल अम्बर
व्याकुल आशा
व्याकुल अन्तर
विकट शूल बिखरे हैं पग-पग, पग-पग के प्रतिरक्षक पावन दीप जलो !
दीप जलो !

प्राण - प्राण में
गान - गान में
ध्यान - ध्यान में
आन - बान में
पावन इच्छा
पावन स्वर हो
पावन निष्ठा
पावन स्तर हो
गाये इन्हीं सुरों में रग-रग, औ' रग-रग की आशा के घर-दीप जलो !
दीप जलो !

मैं भी गाऊं, तू भी गा रे !

मैं भी गाऊ, तू भी गा रे!

दुर्ग भेद जर-जर स्मृतियों के
तार झनझना कर श्रुतियो के
दीप जला कर सत - कृतियों के
पावन स्वर भर आज कण्ठ मे विश्वासों के मन्त्र सुना रे!
मैं भी गाऊं, तू भी गा रे!

गलियो में तू छोड़ भटकना
चौराहे पर सीख पहुंचना
पुलक-पुलक कर सीख सुलझना
छोड सिसकना छुप-छुप मन मे, मुक्त-मन्त्रणा मन्त्र सुना रे!
मैं भी गाऊं, तू भी गा रे!

देख जिन्दगी कितनी छोटी
मौत की नीयत कितनी खोटी
इधर है इच्छा, उधर है रोटी
सम्मुख है कर्त्तव्य तुम्हारा, पहले इसकी प्यास बुझा रे!
मैं भी गाऊं, तू भी गा रे!

जो पूजा का वन कर चन्दन
जो जीवन का वन वन - नन्दन
जो सासों का वन मृदु स्पन्दन
वन्दन करना काम तुम्हारा, मत क्रन्दन के साज वजा रे!
मैं भी गाऊ, तू भी गा रे!

तुझे पड़ी छुपने की आदत
तुझे पड़ी रुकने की आदत
यह आदत कब देती राहत
चाहत रख उठने की प्रतिपल, प्रतिक्षण श्रम की अलख जगा रे!
मैं भी गाऊं, तू भी गारे!

गीत गाने के लिये

जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये
इसलिये बस जी रहा हूं, गीत गाने के लिये

कौन है वे, जिनका दुनियां को झुकाना काम है
मैं तो जिन्दा हूं, इसे ऊंचा उठाने के लिये
जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये

अपनी किस्मत का सितारा ले के अपने हाथ में
मैं चला दुनियां की किस्मत जगमगाने के लिये
जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये

प्रीत की जिन में कमी वे मांगते फिरते हैं प्रीत
प्रीत उनकी है, जो जीते गीत गाने के लिये
जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये

रुदन को देती जनम इन्सान की कमजोरियां
बेखबर है इससे वे, हैं जन्म खाने के लिये
जिन्दगी पाई है मैंने गीत गाने के लिये

[मैं गीत सुनाता जाऊंगा

कटुता के पथ पर

कटुता के पथ पर जीवन के रथ को हाँक रहा इन्सान
सम्भव है कैसे पा जाना उसको इक पल भी मुस्कान

कांच का पुतला ज्वाला-सदन में
रख कर बचाने की चाह
शोलों की माला रख कर गले पर
चाहे हो न कुछ भी दाह
सम्भव है कैसे स्थिरता का रहना पलता जहाँ हो तूफान
कटुता के पथ पर जीवन के रथ को हाँक रहा इन्सान

तिमिरालय में देखी है किसने
जगमग किरण की रेख
मदिरालय में देखा है किसने
शुचि जीवन का विवेक
कैसे न होगा निशि औ' दिवस में वर्णों का व्यवधान
कटुता के पथ पर जीवन के रथ को हाँक रहा इन्सान

साथी, यह कैसी ऋतु आई

साथी, यह कैसी ऋतु आई !

भोर की वेला, आँचल मैला पहने खड़ी हुई है
व्यथित अरुणिमा तिमिर-पदों में देखो पड़ी हुई है
उदय लुप्त है, अस्त गर्जना देती सतत सुनाई
यह कैसी ऋतु आई !

प्राण, वायु दूषित है, दूषित है विवेक का उपवन
झुलस रहा है मदिरा से मानव का मधुमय मधुवन
मध्य मृत्यु औ' जीवन के संसृति विलखे थर्राई
यह कैसी ऋतु आई !

धुआँ उठ रहा, अग्नि-शिखा अब उठने ही वाली है
साँसों की गति भी शायद अब-तब रुकने वाली है
हाहाकार उठ रहा चुप-चुप सिसक रही शहनाई
यह कैसी ऋतु आई !

[मैं गीत सुनाता जाऊँगा

आदमी क्यों आदमी से दूर है !

लड़खड़ाते हैं कदम तो क्या हुआ, ग़म नहीं इसका कि मंजिल दूर है !
ग़म मेरे दिल में है तो इस बात का, आदमी क्यों आदमी से दूर है !

ग़म नहीं है, खेत बीरां हो रहे
ग़म नहीं है, बाग़ियां वीरान है
ग़म यही दिल को सताये जा रहा
खा रहा इन्सान को इन्सान है
सभ्यता आँसू बहाती फिर रही, स्नेह की हर आस चकनाचूर है !
आदमी क्यों आदमी से दूर है !

क्यों डरूं मैं धधकते समसान से ?
याचना मैं क्या करूं भगवान से ?
जिन्दगी औ' मौत का मैं फैसला
मांगता हूं एक कुल इन्सान से !
आज चारों ओर ज्वाला जल रही, शेष केवल कफन का दस्तूर है !
आदमी क्यों आदमी से दूर है !

स्वर्ण के अम्बार लेकर क्या करूं ?
क्या करूं मैं मोतियों के हार का ?
रत्न महल औ' मोतियो से चल सका-
काम इस दुख से भरे संसार का ?
यदि असम्भव आदमी का है मिलन, फिर मुझे तो मृत्यु ही मंजूर है !
आदमी क्यों आदमी से दूर है !

अलग-अलग न चल !

अलग-अलग न चल ओ आदमी, अलग-अलग
अलग-अलग चलन से फटे बीज फूट के, फले बीज फूट के !
गिर पड़ी है जिन्दगानी आज टूट के !

खबर है क्या तुझे किधर ये बढ़ रहे चरण ?
खबर है क्या तुझे किधर ये लग रही अगन ?
जलन ही बस जलन से जमाना तड़प रहा
उगल रही जवानी जहर आज रुठ के !
गिरपडी है जिन्दगानी आज टूट के !
अलग - अलग न चल ओ आदमी, अलग - अलग

न कोई कर रहा है कुछ किसी के वास्ते
भटक रहे है आज सभी भूल रास्ते
उजड़ते सभी रास्तों को देख - देख कर
रो रही है वन्दगानी फूट - फूट के !
गिरपडी है जिन्दगानी आज टूट के !
अलग - अलग न चल ; ओ आदमी, अलग - अलग

सुहाग पर पड़ा कफन, कफन में लगी आग
तड़प रही हर रागिनी, तड़प रहा हर राग
सौभाग्य सांस का विलख - विलख ये बह रहा
ये कौन भगा प्यार की रवानी लूट के !
गिरपडी है जिन्दगानी आज टूट के !
अलग - अलग न चल ओ आदमी, अलग - अलग

[मैं गीत सुनाता जाऊंगा

अभी अन्धेरा पास रे !

अभी उदय ने करवट ली है, अभी अन्धेरा पास रे !
अभी रुग्ण है तेरे, मेरे जीने का विश्वास रे !
अभी अन्धेरा पास रे !

अभी रश्मियों के सीने पर गत रात्रि इठला रही
अभी जिन्दगी की साँसों पर मौन की बदरी छा रही
अभी दबोचे बैठा हर उद्बोधन को उपहास रे !
अभी अन्धेरा पास रे !

अभी काफिला तूफानों का जा पाया है दूर नहीं
अभी चेतना के मस्तक पर लगा अरुण सिन्दूर नहीं
अभी मुक्त हो सका न जनगण अभी वो मनसे दास रे
अभी अन्धेरा पास रे !

अभी हमारे नयन बन्द है अभी लगन कमजोर है
अभी हमारे अधरों पर केवल शैशव-सा शोर है
अभी हमारे राम भोगते फिरते है वनवास रे !
अभी अन्धेरा पास रे !

अभी हमारी श्रद्धा पाषाणों से मन बहला रही
अभी हमारी सेवा संतानों के घर टहला रही
अभी कहां पहचान सके है हम अपना मधुमास रे !
अभी अन्धेरा पास रे !

मैं तो दीप जलाऊंगा !

तुम कहते हो चांद को ढूंढो, मुझे दिवाकर से है प्यार
तुम कहते हो शोषण शुभकर, मैं कहता शुभकर सचार
तुममें - मुझमें इतना अन्तर, कैसे एक बनेगी बात
मुझको इच्छित किरणों का दल, तुम्हें सितारों की बारात
लो तुम निशि-गन्धा की सौरभ, मैं तो सुबह बुलाऊंगा !
मैं तो दीप जलाऊंगा !

तुम भी प्यासे, मैं भी प्यासा, प्यास-प्यास में बड़ा है भेद
तुम लंका-पथ के पथ-दर्शक, मैं सरयू-पथ का संकेत
देख रहे तुम केवल नौका, ढूंढ रहा हूं मैं पतवार
देख रहे तुम जिस नूपुर को, मैं उस नूपुर का आधार
तुम चाहे झूमो विषधर बन, मैं तो बीन बजाऊंगा !
मैं तो दीप जलाऊंगा !

तुम कहते हो कुन्दन ढालो, कुन्दन से घर-द्वार सजालो
मैं कहता हूं कुन्दन बनना, मिट्टी के रंग को अपना लो
मिट्टी का सिंगार सुहाना, सुखदायक जाना-पहचाना
सत्य सुरंजित सांसों से नित, गूंज रहा है यही तराना
तुम चाहे भूलो भू-का स्वर, मैं तो भूल न पाऊंगा !
मैं तो दीप जलाऊंगा !

चन्दन बेचूं, चिता सजाऊं, तोड़ूं फूल कुचल कर मूल
तुम चाहे ऐसा करलो पर मैं न करूंगा ऐसी भूल
मन्दिर की मूरत क्यों पूजूं, ढूंढूं किस कारण भगवान
जब मैं देख रहा हूँ प्रतिपल हर मानव में इक भगवान
तुम जिस अनदेखे में उलझे, मैं तो उलझ न पाऊंगा !
मैं तो दीप जलाऊंगा !

तुम जिस सुख का मन ही मन में प्रतिक्षण करते हो आह्वान
उस सुख के पहलू में मैं तो देख रहा पलते तूफान
त्याग जिसे तुम मान रहे हो उसमें बैठा है अरमान
सत्य अगर व्यापक करलो तो स्वयं यह लोगे तुम पहचान
तुम मानो, मत मानो पर मैं बार-बार यह गाऊंगा !
मैं तो दीप जलाऊंगा !

एक प्रकाश दीप का होता, एक चिता का भी होता
एक दण्ड दुश्मन का होता, एक पिता का भी होता
सुखद पिता का दण्ड मगर दुश्मन का होता सुखद नहीं
सुखद प्रकाश दीप का लेकिन चिता का होता सुखद नहीं
तुम टालो इस बात को लेकिन मैं तो टाल न पाऊंगा ।
मैं तो दो दीप जलाऊंगा !

मैं एकाकी नहीं चलूंगा !

मैं एकाकी नही चलूंगा, साथी साथ निभाना होगा !

दूर-दूर रहने की आदत देख, रहा मैं बनी तुम्हारी
लेकिन मैं बनता जाता हूं सतत पास का प्रबल पुजारी
प्रथा पुरातन है, विदग्ध है, अलग-अलग चलने की साथी !
अब प्राणो से प्राण, हाथ से हंसकर हाथ मिलाना होगा
मैं एकाकी नही चलूंगा साथी, साथ निभाना होगा !

घिरे भेद के अंगारो से सुमन हमारे विश्वासों के
दर्वे प्रपंचों बीच पन्थ है तेरे मेरे उल्हासों के
बता रहा इतिहास कहां से भटके है हम मार्ग भूलकर
अपने भूले मन को अपने आप हमें समझाना होगा !
मैं एकाकी नही चलूंगा साथी, साथ निभाना होगा।

मैं एकाकी तब चलता जब साथे होती अलग हमारी
देश, दिवस, मध्याह्न, सांझ मे रातें होती अलग हमारी
स्वर अटूट सामीप्य रगो का क्यों दुराव दलदल में देखूं
मैं तो देखूंगा बस तुमको मुझको तुम्हें मनाना होगा !
मैं एकाकी नही चलूंगा साथी, साथ निभाना होगा !

मेरा गीत

कण-कण में इस जमीन के मेरा बसेरा है!
उजाला ही उजाला है कहां अन्धेरा है!
कोई कह रहा ये मेरा घर मैं इसके वास्ते
मैं कहता [illegible] विश्वास से संसार मेरा है।

ये धान भरे खेत बने मेरे वास्ते
ये प्यार भरे गान बने मेरे वास्ते
मैं दुनिया का हूं, दुनियां है ये मेरे वास्ते
इसका हरेक फूल हर सिंगार मेरा है!
उजाला ही उजाला है कहां अन्धेरा है!

ये झरने ये तालाब, ये भंवरों की टोलिया
सब बोलते है मेरी तमन्ना की झोलियाँ
सब भर रहे है मेरी खुशियो से झोलियाँ
इनकी ठिठोलियों में छुपा प्यार मेरा है!
उजाला ही उजाला है कहां अन्धेरा है!

कुछ लोग समझते मुझे टूटा हुआ तारा
कुछ लोग समझते है ये है इश्क का मारा
कुछ बेसमझ ये कहते है पागल है बेचारा
लेकिन मैं समझता हूं क्या अधिकार मेरा है!
उजाला ही उजाला है कहाँ अन्धेरा है!

कुछ लोग चश्मे पहनते है रंग बदल-बदल
इसीलिये चलना उन्हें पड़ता सम्भल-सम्भल
मेरी तरह वो चल नही सकते मचल-मचल
सब को दूं जिन्दगी, यही व्यापार मेरा है!
उजाला ही उजाला है कहाँ अन्धेरा है!

जो हसरतें हंसने से पहले टूटने लगती
जो किस्मतें बनने से पहले फूटने लगती
जो हरकतें हलचल से पहले रूठने लगती
मैं उनके वास्ते हूं, यह विचार मेरा है!
उजाला ही उजाला है कहाँ अन्धेरा है!
कण कण मेरी जमीन का मेरा बसेरा है!

मेरा गीत

इक बार गीत मेरा मुझको फिर से दोहराने दो !
मत बांधो बन्धन में मुझको, जरा झूम के गाने दो !
राहत के भूले जीवन ने फिर मुझे पुकारा है
मुझको उन भूलों के जीवन का कल लौटाने दो !
मत बाँधो बन्धन में मुझको, जरा झूम के गाने दो !

उन भूले जीवन को अपनी मन्जिल का पता नहीं
मन्जिल का पता हो कैसे जब दिल का ही पता नहीं
अनजान दिशा की ओर चले वे कदम भिसरते हैं
उन कदमों को मेरे गीतों की दिशा दिखाने दो !
मत बाँधो बन्धन में मुझको, जरा झूम के गाने दो !

यह कोलाहल से घबराकर तन्हाई मांग रहा
वह क्रन्दन, रुदन से तंग आकर शहनाई माग रहा
वह देखो, कोई पनघट के है पास मगर प्यासा
प्यासी आँखों से रह-रह कर अरुणाई मांग रहा
मैं नही देख सकता याचक की आशा के आँसू
मुझको याचक का स्वर साधक-मन तक पहुँचाने दो !
मत बांधो बन्धन में मुझको, जरा झूम के गाने दो !

शायद तुम मुझको रोक के सौ-सौ सावन दे दोगे
लेकिन यह कैसे मानूं मैं, मन-भावन दे दोगे
मैं वन-वन फिरते राम सिया का दुखड़ा देख रहा
क्या उनको तुम फिर से उनका प्रिय आंगन दे दोगे
तुम को लंका के स्वर्णिम सपनो ने बहकाया है
मुझको बहकाओ मत उजडो, बगिया महकाने दो !
मत बांधो बन्धन में मुझ को जरा झूम के गाने दो !

इक जगह रुका जो जल वह जल गन्दा हो जाता है
सौ जगह झुका जो शिर वह शिर गंजा हो जाता है
केवल अपने फल की जिस दिल को चिन्ता घेर गई
वह दिल क्या दिल है, वह दिल तो अन्धा हो जाता है
मेरी आँखें मेरे गीतों के बल से रोशन है
इसलिये रुको, मुझको मेरी आंखें सहलाने दो।
मत बाँधो बन्धन में मुझको, जरा झूम के गाने दो !
इकबार गीत मेरा मुझको फिर से दोहराने दो !

हर कदम पर नया गीत लिखता हूं मैं

हर कदम पर मुझे एक ठोकर लगी
हर कदम पर हृदय गुनगुनाने लगा
लाख तूफान आये, मैं मचला नहीं
दर्द भी झेंप कर गिड़गिड़ाने लगा
आग पहलू में मेरे पनाह पा रही
हर कदम पर नया दीप रखता हूं मैं
हर कदम पर नया गीत लिखता हूं मैं

कल्पना युद्ध है, साधना शुद्ध है
कामना एक ही लक्ष्य साधे खड़ी
फूल मुर्झा रहे, शूल बल पा रहे
तोड़ दूं शूल को, आस यह हर घड़ी
बर्छियां आपदा की कदम छेदती
बढ़ रहा हूं मगर कब बिलखता हूं मैं
हर कदम पर नया गीत लिखता हूं मैं

मुस्कुराती नई पौध की है कसम
मैं बढ़ूंगा हमेशा, रुकूंगा नहीं
आदमी को अमन बख्शना है मुझे—
मौत के सामने भी झुकूंगा नहीं
दर्द मेरा बदल कर हंसी बन गया
विष भर के जहर को निगलता हूं मैं
हर कदम पर नया गीत लिखता हूं मैं

मैं आदमी बना रहा

नवीन विश्व के लिये, नवीन भाव से भरा !
नवीन रक्त - दान दे, मैं आदमी बना रहा !
मैं आदमी बना रहा !

कि जिसका एक-एक स्वर सुचेतना से युक्त हो
विशाल हो न वह स्वयं विभक्त हो, असक्त हो
न जिसके हाथ से कभी जला हुआ दिया बुझे
सदा कुटिल कराल तत्व नष्ठ-भ्रष्ट हो मुके
विरान वाटिका मे मैं नये कुसुम खिला रहा !
मैं आदमी बना रहा, मैं आदमी बना रहा !

मैं दीप वह जला रहा जो आँधियों मे भी जले
मैं वृक्ष वह लगा रहा जो युग-युगों तलक फले
मैं गीत वह सुना रहा जो जिन्दगी को गूँज दे
मैं राग वह सुना रहा जो शक्ति-मन्त्र फूंक दे
विकास-पथ स्वयं का दिल के जगमगा रहा !
मैं आदमी बना रहा, मैं आदमी बना रहा !

[मैं गीत सुनाता जाऊंगा

एक ठोकर और खाने दे मुझे !

एक ठोकर और खाने दे मुझे, दिल की ताकत आजमाने दे मुझे !
मानता हूं दौर है यह लूट का, लूट में कुछ तो लुटाने दे मुझे !

दिल किसी का हो मगर टूटे नही
हाथ आकर हाथ से छूटे नही
जिन्दगी तो खुश है, मेरे पास आ
चाहता हूं, मौत भी रूठे नहीं
गीत बस ऐसे ही कुछ दो-चार लिख, दो घड़ी तो गुनगुनाने दे मुझे !
एक ठोकर और खाने दे मुझे !

असलियत ने फिर पुकारा है मुझे
प्यार से मैंने संवारा है मुझे
इसलिये हरगिज मैं बिक सकता नही
लूट ले कोई, गवारा है मुझे
लूटने वालो की बहकी प्यास को, आखिरी प्याला पिलाने दे मुझे !
एक ठोकर और खाने दे मुझे !

चाह मेरी मुक्त है, मैं मुक्त हूं
सोच लेना यह न तुम कि विरक्त हूं
अंङ्ग हो, या रूप हो, या बल हो तुम
मैं धमनियों में जो बहता; रक्त हूं
भक्त हू हर प्राण का, हर प्राण पर, प्यार का घन बन के छाने दे मुझे!
एक ठोकर और खाने दे मुझे!

दीप मन में जल रहा विश्वास का
मैं नहीं हूं दास बहकी प्यास का
जिन्दगी मुझको मिली इन्सान की
यत्न बनना है मुझे हर आस का
विघ्न के तूफान उठ आ सामने, प्यार कुछ तेरा भी पाने दे मुझे!
एक ठोकर और खाने दे मुझे!

जी रहा हूं, आखिरी दम के लिये
पी रहा हूं, गम को मैं गम के लिये
शूल जितने भी है मुझको सौंप दो!
भेजकर दो फूल हमदम के लिये
आग अन्तिम कह न पाये बात यह, एक कायर को जलाने दे मुझे!
एक ठोकर और खाने दे मुझे!

मैं अन्तहीन

मैं अन्तहीन, मैं अन्तहीन, मुझसे अनन्त की बात करो !
मुझसे दिगन्त की बात करो, मुझ से वसन्त की बात करो !

मैं प्रथम पुरुष, मैं प्रथम बीज, मुझसे रह सकता विलग कौन ?
मैं महाउदय का शंखनाद, मैं महाशून्य का मुखर मौन !
मैं प्राण-वायु का मूर्त-रूप, मैं सतस्वरूप मैं विश्व-रूप
हर पतझड़ और प्रभंजन का अन्तर-स्वर मैं ही हूं अनूप
मुझसे संकट के हर क्षण में आओ, प्रबन्ध की बात करो !
मैं अन्तहीन, मैं अन्तहीन, मुझसे अनन्त की बात करो !
मुझसे दिगन्त की बात करो, मुझसे वसन्त की बात करो !

दल-दल, दावानल, या मरघट, मैं सब के चोर चला घूंघट
मैं रङ्ग अङ्ग से हूं आगे, मैं यदि हूं कुछ तो हूं हृद्तट
हर तृषित प्राण का मैं पनघट, हर व्यथित प्राण का मैं प्रियवट
हर नगर-डगर, का मधुर गीत, हर कण्ठ-कण्ठ का स्वर उद्भट
मुझको कांटो-कलियों से क्या, मुझसे सुगन्ध की बात करो !
मैं अन्तहीन, मैं अन्तहीन, मुझसे अनन्त की बात करो !
मुझसे दिगन्त की बात करो, मुझसे सुगन्ध की बात करो !

मैं निखिल अकृत्रिम, नैसर्गिक लहरो-किरणों के क्रम जैसा
मैं सबल, शांन्ति, संतोष-केन्द्र शिव-रूप श्रमिक के श्रम जैसा
जीवन हूँ जड चेतन सबका बस जीवन का हूं अनुरागी
मुझको इसका कुछ क्षोभ नहीं, जग मुझको कहता वैरागी
मुझसे त्यागी बागी-सी नहीं, इक ज्ञानवन्तसी बात करो !
मैं अन्तहीन, मैं अन्तहीन, मुझसे अनन्त की बात करो !
मुझसे दिगन्त की बात करो, मुझ से वसन्त की बात करो !

मैंने जीना सीख लिया है !

जीवन की उलझी गलियों में
गिरते, पड़ते, ठोकर खाते
बिन दिग्दर्शन के ही मैंने
अब जीवन पथ ढूंढ लिया है।
मैंने जीना सीख लिया है !

ऊबड़-खाबड़ इस जीवन में
कितनी बार बचा हूं मर-मर
कितनी बार बही हैं आंखें
निर्झरणी-सी अविरल झर-झर
विपदा के झंझावातों से मैंने लड़ना सीख लिया है !
मैंने जीना सीख लिया है !

कम्पन करता था तन सारा
चट्टानों को देख-देख कर
कदम बढ़ाया करता था मैं
आगे गुस्ता देख झेंपकर
लेकिन अब तो एवरेस्ट पर भी तो चढ़ना सीख लिया है !
मैंने जीना सीख लिया है !

पहले वाणी रुक जाया करती—
थी चन्द जनों के आगे
स्वर जाते थे टूट-टूट ज्यों
टूटा करते कच्चे धागे
पर अब तो निर्भय हो मैंने गर्जन करना सीख लिया है !
मैंने जीना सीख लिया है !

पहले मैं डरता था दिल में
देख अमावस काली - काली
सूरज भी लगता था जैसे
अंगारों की होती थाली
लेकिन अब आलोक बना मुद् रवि से नाता जोड़ लिया है !
मैंने जीना सीख लिया है !

पहले देख धधकता मरघट
मृत्यु शीश पर छा जाती थी
देख चिता की भस्म हृदय के
मुख को चिन्ता खा जाती थी
लेकिन अब तो जल मरघट में जिन्दा रहना सीख लिया है !
मैंने जीना सीख लिया है !

पहले मन-भावों का दीपक
लघु झोंकों से बुझ जाता था
छोटी - मोटी चट्टानों में
बहता सोता रुक जाता था
लेकिन अब तो रोक आंधियां, सलिल बहाना सीख लिया है !
मैंने जीना सीख लिया है !

पहले मेरे आर्द्र हृदय से
अनुचित लाभ उठाता था जग
मैं जो बहकावे में आकर
कभी भूल जाता था निज मग
लेकिन अब तो पथ निश्चित कर मैंने चलना सीख लिया है !
मैंने जीना सीख लिया है !

दीपक सदा जलेगा

जब तक मै जिन्दा हूं जग में दीपक सदा जलेगा !

घृत की जगह सींचकर शोणित
इसको मैं बल दूंगा !
फैलाकर आलोक अपरिमित
अन्धकार हर लूंगा !
सदा रहेगा प्रात किसी को कोई नहीं छलेगा !
जब तक मैं जिन्दा हूं जग में दीपक सदा जलेगा !

रन्ध्र रन्ध्र में भूमण्डल के
स्नेह लहर लहरेगी !
सत्य संगठन ध्वजा,
हिमालय पर निशि दिन फहरेगी
मानव के दिल में मानव का शाश्वत प्यार पलेगा !
जब तक मैं जिन्दा हूं जग में दीपक सदा जलेगा !

नष्ट शक्ति होगी आँधी की
झंझावात रुकेंगें !
मन्द मन्द मृदु पवन चलेगी
नित नव फूल खिलेंगें !
गुण की गरिमा गायेगा जग अवगुण सतत गलेगा !
जब तक मैं जिन्दा हू जगमें दीपक सदा जलेगा।

कहाँ गये

दीप भी जला लिया प्रकाश भी बुला लिया
भटक रहे हैं वे कहाँ जिन्हें प्रकाश चाहिये।

तार झनझना रहे
कण्ठ गुनगुना रहे
मेघ भी बरस रहे,
प्रसून भी सरस रहे!
भटक रहे हैं वे कहाँ जिन्हें सुवास चाहिये!

चरण स्वतन्त्र हो गये
नयन स्वतन्त्र हो गये
लगन स्वतन्त्र हो गई
शकुन स्वतन्त्र हो गये
भटक रहे हैं वे कहाँ जिन्हें विकास चाहिये
दीप भी जला लिया प्रकाश भी बुला लिया
भटक रहे हैं वे कहाँ जिन्हें प्रकाश चाहिये

बोलो जय जय भारती

एक हाथ में दीपक लेकर एक हाथ में आरती
अन्तर में ले प्यार विश्व का बोलो जय जय भारती !

कण-कण से आवाज आ रही हमें चाहिये एकता !
नही चाहिये मन्दिर, मस्जिद, गिरजा घर के देवता !
धिक्कारो उस ताकत को जो नहीं किसी को तारती !
बोलो जय जय भारती !

कह दो हम गंगा के बेटे औ' यमुना के प्रान हैं !
रक्षा का हथियार हमारा बांसुरिया की तान है !
हम उस मा के लाल जो जग पर तन-मन अपना वारती !
बोलो जय जय भारती !

हमने तो सिंगार किया है अपना नित बलिदानो से !
गौरव पनपा नही हमारा महलों से मयखानों से !
हम उस मिट्टी के बन्दे जो गिरते प्रान उबारती !
बोलो जय जय भारती !

हमने मानव की सासों को बख्शा शाश्वत प्यार है !
हमें विश्व को कुछ कहने का इसीलिये अधिकार है !
हम उस वाणी के स्वर हैं जो पावन मन्त्र उचारती !
बोलो जय जय भारती !

मत दीप जलाओ दीवारों पर दीवानो !

मत दीप जलाओ दीवारों पर दीवानो !
यह वेला है अन्तर का दीप जलाने की !
यह वेला है सोया इन्सान जगाने की !
यह वेला है मन का भगवान जगाने की !

घर, दर, खिड़की, छत, छप्पर पर दीपक रखने से क्या होगा !
कागज की लक्ष्मी मूरत पर नित सिर रखने से क्या होगा !
क्या लक्ष्मी की जयकारों से खेतो में धान उपजता है !
क्या मिल मालिक मजदूरों का इस से संघर्ष सुलझता है !

क्या इससे बहन बहू, बेटी, का अस्मत बिकना रुका कभी !
क्या इससे पास पड़ोसी के घर का भूखापन मिटा कभी !
लाखों आवृत्तियां खत्म हुईं इन पर्वो की त्योहारों की !
लेकिन हालत कब सुधर सकी भूखे नंगे लाचारों की !
यह जगमग माला जाली है यह दीपक माला काली है !
मित्रों ये रस्में सारी है अपना ईमान लुटाने की !

मत दीप जलाओ दीवारों पर दीवानों !
यह वेला है अन्तर का दीप जलाने की !
यह वेला है सोया इन्सान जगाने की !
यह वेला है मन का भगवान जगाने की !

घर-घर घी के दीप जलाओ

आज उठो स्वातन्त्र्य पर्व पर घर-घर घी के दीप जलाओ !

क्षमा, धर्म, दृढ़ता, पटुता से एक नया इतिहास रचो तुम
कृत्रिम आभरणों को तज कर सत्य, स्नेह से सदा सजो तुम
किसने तुम्हें स्वयं के घर में आग लगाना सिखा दिया है
किसने तुम्हें दुखद मदिरा का प्याला भरकर पिला दिया है
किसने कहा तुम्हें बतलाओ प्रातः में मुख ढक सो जाना ?
सर्वनाश को स्वर्ग समझकर पागल बन उसमें खो जाना !
उठो लिये औदार्य विश्व से सही शुद्ध अनुराग बढ़ाओ
घर-घर घी के दीप जलाओ !

मत भूलो उन अमर शहीदों की लासानी वह कुर्बानी
सब कुछ तजकर निकल पड़े थे जो नर रचने नई कहानी
मानव जीवन का कलंक परतन्त्र शृंखला खण्डित करने
शुभ स्वातन्त्र्य मृदुल मेघों से सकल विश्व को मण्डित करने
दण्डित करने उन कुपुत्र कटुता खलता से पूर्ण जनों को
उन वीरों को ध्येय धरा पर जगमग ज्योति जलाओ
घर-घर घी के दीप जलाओ !

देखो वह बेहाल भटकती चेनू की इकलौती बेटी
रामू की अम्माँ को देखो पड़ी हुई है भूखी लेटी
कमल विचारा सारे दिन ऑफिस में बैठा श्रम करता है
फिर भी पूरा पेट न भरता नित आधा भूखों मरता है
बीवी के स्तन शुष्क दूध बिन बच्चे तिल-तिल कर मरते हैं
लाखों पुरुष यहां योंही आये दिन अनचाहे मरते हैं
ऐसी विकट दशा में मिलकर जीने का सिद्धान्त बनाओ !
घर-घर घी के दीप जलाओ !

जाने क्यों तुम आते मेरे पास नहीं

जाने क्यों तुम आते मेरे पास नहीं
तुम बिन मैं लिख सकता नव इतिहास नहीं

भेद का विष यूं कब तक उगले जाओगे
खेद की गाथा कब तक लिखते जाओगे
हाथ खड़े यूं कब तक मलते जाओगे
किस बल पर जो मांग रहे वह पाओगे
उदय मिलन के उपवन में मुस्काता है
इस पर तुम को क्यों होता विश्वास नहीं
जाने क्यों तुम आते मेरे पास नहीं !

देख रहा हूं, तुम चलने को विलख रहे
लेकिन गति क्या होती तुम को ज्ञात नहीं
गति जो देता प्रतिपल तेरे जीवन को
उससे जा तुम कभी मिलाते हाथ नहीं
गति मिलती है मति से मति के बन्दों का
तुम क्षण भर भी कर पाते सहवास नहीं
जाने क्यों तुम आते मेरे पास नहीं !

चाहों का तूफान लिये तुम चलते हो
साधों का समसान लिये तुम जलते हो
इस पर भी विश्वास तुम्हें तुम चलते हो
लेकिन मैं तो देख रहा तुम ढलते हो
अलग-अलग जो जीते बन कर अंगारे
उनको मिल सकता हरगिज मधुमास नहीं
जाने क्यों तुम आते मेरे पास नहीं !

गरीब !

लुटने न दूंगा मैं कभी !!
मिटने न दूंगा मैं कभी अधिकार तुम्हारा
दो मीत मुझे साथ मैं हूं प्यार तुम्हारा।

है एक नजर मेरी डाकुओं की भीड़ पर
है एक नजर मेरी तेरे लुटते नीड़ पर
मैं सुन रहा हूं मीत! हाहाकार तुम्हारा
दो मीत मुझे साथ मैं हूं प्यार तुम्हारा!

तुम देवता ईमान के भगवान के स्वरूप
गरीब अब न सहनी होगी तुम को अधिक धूप
चमका के रहूंगा तुम्हारे चैन का तारा
दो मीत मुझे साथ मैं हूं प्यार तुम्हारा!

आवाज में मेरी उठो आवाज मिलाओ
हमदम मेरे, मेरे सुरों से साज मिलाओ
माहग ने मेरे आज तुम्हें फिर से पुकारा
दो मीत मुझे साथ मैं हूं प्यार तुम्हारा।

देखो सावन सूख न जाये !

हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर है पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल

पवन का अन्तर काप रहा है, गगन की आंखो में है रोना
बनता जाता दिन प्रति दिन भूगोल व्यथा के कारण बौना
कोलाहल की उमस कर रही बढ़कर क्रन्दन का अभिवादन
कैसे करे बांसुरी मधुरिम नव रागिनियों का प्रतिपादन
भेद रहा है तिमिर, सरों से नवल प्रभाती का अरुणांचल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर हैं पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल !

बलिवेदी के फूल वासना के आंगन में बिखर रहे है
बन सहस्त्र कर कांटे कलिदल को विदीर्ण कर निखर रहे है
दुग्धालय की देखभाल हित हैं नियुक्त बिल्ली के बेटे
विद्यालय निन्द्रा संग क्रीड़ा कार्य कर रहे लेटे-लेटे
मति की मांग मिट रही, गति के नयनों को डंस रहा है काजल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर हैं पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल।

क्रय-विक्रय के दाव-पेंच से कौन रहा है आज बिन जले
किसको छोड़ रहा है कोई इस दुनियां में आज बिन छले
हालत देख आज की निश्चय कल ये ही अनुमान घटेगा
पशुवत् पुरुषों के चमड़े का भी सूनी नीलाम लगेगा
बांध रही जिह्वा-जिह्वा को चाँदी की पेंचीली सांकल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर हैं पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल।

जीवन की खुशबू चिमनी के धूंवे से घुटती जाती है
हर बस्ती अपने वासिन्दों के हाथों लुटती जाती है
कल्याणी वाणी की बस्ती पर छाया देखो वीरांना
रथ अपने रथ वाहक से ही होकर भटक रहा अनजाना
हर मुखड़े पर दुखड़ा छाया हर मन की मञ्जिल है घायल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर हैं पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल।

किसे सुनाये कोई जाकर अपने मनका रोना-धोना
सब का लक्ष्य बन रहा पाये केवल चाँदी केवल सोना
गलियों में सड़ रही साधकों की नव-साधक शुचि सन्तान
असफल हो भू पर जीने में नभ को भेद रहा विज्ञान
देखो कहीं न हो जाये हम बारूदी दुनियां के कायल
हाहाकार उठा चातुर्दिक शहनाई के स्वर हैं पागल
देखो सावन सूख न जाये बिजली निगल न जाये बादल।

ओ उठ आवाज दे !

ओ उठ आवाज दे तू 'दुनियां को प्यार दे तू' !
सोये है धरती पर जो भूलकर अपने भुजबल को

उनको उल्लास
अभिनव हास
नव विश्वास दे तू !
ओ उठ आवाज दे तू !

देखो वह भूखा नंगा ताक रहा खेतों का राजा
सोचो मजदूर का हर रोज क्यों निकले जनाजा
उनका क्यों जीवन सूना
शोषण बढ़ता दिन दूना
आधी से ज्यादा दुनियां मांगती इन्साफ दे तू
ओ उठ आवाज दे तू !

सदियों से देख रहा मैं तू करता पत्थर से बातें
जिन्दे इन्सानों के खातिर तेरे दिल में है घातें
जिन्दों की जान जलाना मूर्दों से प्रीत लगाना
दुनियां की इस गन्दी तासीर को अंगार दे तू
ओ उठ आवाज दे तू !
ओ उठ आवाज दे !

नये मनुष्य !

नये मनुष्य मृत्यु से डरो नहीं, बढ़े चलो,
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो बढ़े चलो !

बढ़े चलो तिमिर घटा को वीरता से काटते
बढ़े चलो विपत्ति खाइयों को आज पाटते
बढ़े चलो कुरीतियों के बन्ध तोड़ते हुए
बढ़े चलो सुरीतियों के छन्द जोड़ते हुए
सुशान्त, सभ्य, सज्जनों को संगठित किये चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

वह जिन्दगी क्या, जिन्दगी कि जिसमें वीरता नहं
वह मौत भी क्या, मौत है कि जिसमें शूरता नहं
वह देह भी क्या देह है, न जिसमें हो मनुष्यत
वह प्राण भी क्या, प्राण है न जिसमें हो पवित्रत
घिरे तूफान लाख, पर झुको नहीं बढ़े चल
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो

पुकारती वसुन्धरा, दिशायें भी पुकारती
पुकारता गगन, नवीन रश्मियां पुकारती
असंख्य आंधियां घिरे, करो निशंक सामना
भविष्य सौख्यमय बने, बढ़ो यही ले भावना
बने तुम्हारे जोश से नई नई कहानियां
सुघड़ बने, सुन्दर बने, नई दुनी जवानियां
गरल घटों को फोड़ते, सुधा "सुधार" ले चलो
बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो !

मैं तुम्हें फिर से नया इतिहास दूंगा

मैं तुम्हें फिर से नया इतिहास दूंगा !
मैं तुम्हे फिर से नया विश्वास दूंगा !

मैं तुम्हारी कामना का गीत बनकर
मैं तुम्हारी भावना का मीत बनकर !
मिट न पाये जो कभी वह सांस दूंगा !
मैं तुम्हे फिर से नया इतिहास दूंगा !
मैं तुम्हें फिर से नया विश्वास दूंगा !

तुम न मुझको मीत अब तक जान पाये !
किन्तु मैंने नित तुम्हारे गीत गाये !
मीत मैं तुमको मिलन की प्यास दूंगा
मैं तुम्हे फिर से नया इतिहास दूंगा !
मैं तुम्हें फिर से नया विश्वास दूंगा !

घेरती रहती तुम्हें प्रतिपल प्रथायें !
छेड़ती रहती तुम्हें प्रतिपल व्यथायें !
मैं तुम्हें उनसे छुड़ा मधुमास दूंगा !
मैं तुम्हें फिर से नया इतिहास दूंगा !
मैं तुम्हें फिर से नया विश्वास दूंगा।

विश्वास-गीत

पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम !
अभिशाप भरा मधुमास न फिर लौटाने देंगे हम !

नई सृष्टि को, नई दृष्टि-निर्माण नया देगी।
इन्सान नया अरमान नया, विज्ञान नया देगी !
सन्ताप भरा आकाश न फिर रच पाने देंगे हम !
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम !

हम तुलसी, सूर, कबीर के बेटे दान नहीं लेंगे !
वरदान, ज्ञान, उत्थान के दाता प्राण नहीं लेंगे !
दुर्जाय भरा विश्वास न फिर जन्माने देंगे हम !
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम !

उत्तेजित दुर्मति मान स्वयं हिमगिरि से हारेंगे !
जो जीवन से अनजान हमेशा जन से हारेंगे !
परिताप भरी दुर्प्यास न फिर जग पाने देंगे हम !
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम !

हम अर्जुन के गाण्डीव जिन्दगी के दीवाने हैं
हम परशुराम के हाथ विजय हो पानेवाले हैं।
रिपुताप भरा उपहास न फिर पनपाने देंगे हम
पाप भरा इतिहास न फिर दोहराने देंगे हम।

आग वर्फ में लगी खून से बुझायेंगे

आग वर्फ में लगी खून से बुझायेंगे
किया नहीं किसीने वह करके हम दिखायेंगे
इतराके चल रहे है जो उन्हे सवक सिखायेंगे
सरहद पे अपनी शान का अवुझ दिया जलायेंगे
आग वर्फ में लगी खून से बुझायेंगे।

किसने कहा खतरे में है हमारी आज आवरू
खतरा वचाता फिर रहा है आज अपनी आवरू
यह जीत चाहता है; हार से हो जो दवा हुआ
हमारा ध्वज तो जीत हार से अलग खड़ा हुआ
हमलावरो! हमले से हम कभी न डगमगायेंगे
आग वर्फ में लगी खून से बुझायेंगे।

मुकाबले पे फिर कोई मुकावला किया करे
कोई गुनाह किया करे कोई गिला किया करे
हम हर गुनाह को विना सजा मिटाते जायेंगे
शिकायतों के जन्म की कथा मिटाते जायेंगे
बदली हुई नजर का रुख वदल के डग वढ़ायेंगे
आग वर्फ में लगी खून से बुझायेंगे।

लगी किसी के घर में आग, आँच हमको लग रही
दिया यहाँ पे जल रहा, चिता वहाँ सुलग रही
स्वयं के सिर के बोझ से दब के कोई गिर रहा
हमारा चैन देखकर, कोई जहर उगल रहा
यह जानकर चले थे हम यह मान चलते जायेंगे
आग बर्फ में लगी खून से बुझायेंगे!

हम पुत्र है प्रताप के, शत्रु हैं हर पाप के
वरदान के धनी हैं हम, नहीं किसी अभिशाप के
किसीके हक को छीनना हमें कभी रुचा नही
दिया जलाया हमने यह किसीसे जो बुझा नही
है जब तलक जमीं फलक मजक यही दिखायेंगे
आग बर्फ में लगी खून से बुझायेंगे!

सम्भव नहीं सूरज की रोशनी का हाथ थामना
सम्भव नही हमारी कोई डगमगादे भावना
सम्भव नही विफल करे हमारी कोई साधना
सम्भव नही कोई करे हमारे बल का सामना
सम्भव है क्या औ' क्या नही यह अब लो हम बतायेंगे
आग बर्फ में लगी खून से बुझायेंगे!

मेरा हिन्दुस्तान

डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान !
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान !

गङ्गा, गीता, सियाराम, इसके भुजवल की धरती
इसकी आशा सब की आशा का संशोधन करती
सकल विश्व के हित होता है इसका हर अभियान
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान !
मेरा हिन्दुस्तान, मुक्ति के दूतों का भगवान !

खेद है दुनिया समझ न पाती इसकी क्या अभिलाषा
शायद दुनिया समझ न पाती जीवन की परिभाषा
इसने जीवन दिया है जगको दिया है अभ्युत्थान !
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान !
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान !

मेरा हिन्दुस्तान रहा है नित्य अमर बलिदानी
मेरा हिन्दुस्तान रहा है नित्य अमर वरदानी
राम समझता रहा यह जग को बनके खुद हनुमान
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान !
मेरा हिन्दुस्तान मुक्ति के दूतों का भगवान !

प्रेम का मन्दिर स्नेह का उपवन ये है सत्य का गीत
इसके कण-कण से गूंजा नित मिलन भरा संगीत
दी है हमेशा जगको इसने उद्बोधित मुस्कान !
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान !
मेरा हिन्दुस्तान, मुक्ति के दूतो का भगवान !

आदर इसके तन की चादर, श्रद्धा इसकी धोती
इसीलिये ये जगको देता, रहा जवाहर-मोती
इसका हर बच्चा पौरुष है, शिवा है औ' चौहान !
डिक्टेटर का प्रथम शत्रु है मेरा हिन्दुस्तान !
मेरा हिन्दुस्तान, मुक्ति के दूतों का भगवान !

देश निराला

देश निराला है, मेरा देश निराला
मेरे देश ने संसार को दिया है उजाला
मेरे देश के गौरव पे कीचड़ जिसने उछाला
इतिहास ने मुख उसका किया है सदा काला

मेरे देश-सा कोई देश और हो नहीं सकता
मेरा देश बीज फूट का वहीं वो नहीं वपता
मेरे देश का सिंगार नित करती रही क्षमा
मेरा देश है सदा सजग कभी सो नहीं सकता

मेरे देश ने पाई है तपोवन से जवानी
मेरे देश की इसलिये है ऐसी कहानी
सुनकर जिसे हर शीश गर्व से उठा ऊंचा
बनता रहा बन्दा हमेशा वीर औ' दानी
इन्सानियत को इसने नित गिरने से सम्भाला
देश निराला है, मेरा देश निराला

मेरे देश ने संसार को सम्मान दिया है
सुख, शान्ति, स्नेह, शक्ति का वरदान दिया है
माना कि ये रहा है खुद हमेशा कष्ट में
इसपर भी इसने चैन का सामान दिया है
विज्ञान के तूफान से ये मिट नहीं सकता
हरगिज किसी शैतान से ये लुट नहीं सकता

सिर को हमेशा इसके दुलारा है राम ने
सिर इसका कभी इसलिये कहीं झुक नहीं सकता
उस देश को मिटा सकेगा कौन बताओ ?
जिस देश में मकान को कहते हैं शिवाला
देश निराला है, मेरा देश निराला

इस देश की धरती पे सूरज मेहरबान है
इस देश की मिट्टी से गूंजा सामगान है
इस देश की ध्वजा पे अशोकी निशान है
इसीलिये इस देश की महिमा महान है

राधा भी इसने दी है तो सीता भी इसने दी !
सन्ध्या भी इसने दी है तो गीता भी इसने दी
बताओ ऐसी नारियां दुनियां को किसने दी ?
सोचो, यह देश क्या है ऐसी शान जिसने दी ?
हर धर्म को इसीने अपनी गोद में पाला
देश निराला है, मेरा देश निराला
मेरे देश ने संसार को दिया है उजाला !

तुम्हें कह रही है तुम्हारी कहानी

तुम्हें कह रही है तुम्हारी कहानी
न आने दो शिर तक किसी के भी पानी
बुढ़ापा अगर आ गया हो तुम्हें तो
उठो ! मेरे गीतों से लेकर जवानी

उठो ! जिन्दगी यह तुम्हे कह रही है
उठो ! आदमी ने तुम्हें फिर पुकारा
जमी है तुम्हारी, गगन है तुम्हारा
किरन है तुम्हारी, पवन है तुम्हारा
उठो ! चांदनी को, भरो गोद में
चन्द्रमा को, भी दिखला दो अपनी रवानी
तुम्हें कह रही है तुम्हारी कहानी

सितारों के झूलों में झूलो, उठो तुम !
न बल अपने तन का भुलाओ, उठो तुम
निराशा के पतझड़ में क्यों उलझे जाते
सुआशा के उपवन में फूलो, उठो तुम !
मैं मौसम बुलाता हूं आवाज देकर
तुम झूमो उमङ्गों से लेकर जवानी
तुम्हें कह रही है तुम्हारी कहानी !

तुम मुझे पुकारते रहो !

तुम मुझे पुकारते रहो !
मैं तुझे पुकारता रहूं !
तुम मुझे संवारते रहो !
मैं तुझे संवारता रहूं !
इस तरह लुटाते मस्तियां
प्यार की बसाते बस्तियां
संवारते चलें ये जिन्दगी, गीत ये उबारते रहो !
तुम मुझे पुकारते रहो !

तेरी मेरी एक चाह हो
तेरी मेरी एक राह हो
देखकर हमें जहां कहीं
सब के मुंह पे वाह-वाह हो
बहार को बहार देके हम
सिंगार को सिंगार देके हम !
बादलों की छांव में चलें !
आंचलों के चाव में पलें, प्रीत को निखारते रहो !
तुम मुझे पुकारते रहो !

यह उम्र नित जवान ही रहे !
लबों पे एक गान ही रहे !
पड़े हमारी जिस पे भी नजर
वो बन हमारी जान ही रहे !
चमन की हर गली में झूमते
नयन की हर हंसी को चूमते
लगन की हर गली में गूंजते, जीत को निहारते रहो !
तुम मुझे पुकारते रहो !

सदा है ये सनम बहार की
जिन्दा दिलों के करार की
वह जिन्दगी भी क्या है जिन्दगी—
खबर न जिसे कुछ हो प्यार की !
डूबकर किसीके प्यार में
झनझना के दिल के तार को, मीत को संवारते रहो !
तुम मुझे पुकारते रहो !

चाह इतनी है

चाह इतनी है कि पाऊं एक बार
एक पल तेरे हृदय के प्यार को
उम्र सारी में समर्पित कर रहा
प्राप्त करने बस इसी अधिकार को।

लाख उम्रें कम है तेरे प्यार से
क्योंकि तेरा प्यार अतुल पुनीत है,
किन्तु अनुकम्पा उसे क्या ना मिली
जो अकिंचन है मगर सुविनीत है
मन तो क्या मेरू भी कब ठुकरा सका
विनय बन् बहते हुए उद्गार को
चाह इतनी है कि पाऊं एक बार
एक पल तेरे हृदय के प्यार को

गुनगुनाहट तेरे प्राणों की मधुर
क्या बुलाहट मेरी बन सकती नहीं
कुलबुलाहट तेरे चरनों की मधुर
पास की आहट क्या बन सकती नहीं
हिचकिचा कर, मुख घुमाकर, रूठ कर,
मत उभारो बीच की दीवार को!
चाह इतनी है कि पाऊँ एक बार
एक पल तेरे हृदय के प्यार को
उम्र सारी में समर्पित कर रहा
प्राप्त करने बस इसी अधिकार को

मैं गीत सुनाता जाऊंगा]

मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये

मुस्कान एक भी जो दुनियां को दे न पाये,
वे किस लिये यहाँ पर है मुँह दिखाने आये
वे क्यूं न सोचते यह की जिन्दगी में हम तो
नाता क्यों एक भी तो अब तक निभा न पाये
रोतों के सामने जो हसता खड़ा अकेला
हसतों के सामने जो रोता खड़ा अकेला
कहते है उसको क्या यह वे क्यूं समझ न पाये
मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये
वे किस लिये यहाँ पर हैं मुंह दिखाने आये!

सच मुच वही है हंसता जो दिल मिला के हँसता
सच मुच वही है रोता जो दिल मिला के रोता,
वे कौन है जो अब तक दिल मिला न पाये
मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये
वे किस लिये यहाँ पर है मुंह दिखाने आये
हैरान हो रहा हूं फितरत को देख उनको
हैरान हो रहा हूँ हसरत को देख उनकी
रब तक गये, किसी को खुद तक बुला न पाये
मुस्कान एक भी जो दुनिया को दे न पाये
वे किस लिये यहाँ पर है मुंह दिखाने आये

आओ पनघट ढूंढें !

आओ हम सब मिलकर अपनी आशा के पनघट को ढूंढें
एकाकी हम सब शायद पनघट को ढूंढ न पायेंगे !
उम्र गुजर ही जायेगी हम प्यासे ही रह जायेंगे !

सुना है आशा का पनघट पथ घिरा हुआ है तूफानों से
प्राप्त न वह पनघट हो सकता छोटे मोटे बलिदानों से
आस के पनघट का मिल जाना बँसे कोई-खेल नहीं है
खेल भी है यदि तो वह कोई बच्चोंवाला खेल नहीं है
जान हथेली पर रख कर जो चल सकते हैं बिन घबराये
वे ही इक दिन उस पनघट के पहरेदार कहायेंगे
आओ हम सब मिल कर अपनी आशा के पनघट कोढूंढें
एकाकी हम सब शायद पनघट को ढूंढ न पायेंगे !

देख रहा हूं हम अपने विश्वास के दावेदार नहीं !
इसी लिये हम आस का पनघट पाने के हकदार नहीं !
नाव में बैठे हैं हम लेकिन पास अभी पतवार नहीं !
केवल नैया के बल कोई आ सकता उसपार नहीं!
समाधान का साधन निष्ठा के घर बंदी बना रहा
बिन निष्ठा के हम साधन तक कभी पहुँच ना पायेंगे
आओ हम सब मिल कर अपनी आशा के पनघट को ढूंढें
एकाकी हम सब शायद पनघट को ढूंढ न पायेंगे

तुम मुझे तूफान दो

तुम मुझे तूफान दो पर मैं तुम्हें मुस्कान दूंगा !
तुम मुझे अभिशाप दो, पर मै तुम्हें वरदान दूंगा !

जानता हू तुम विवश हो, जानता हूं तुम विकल हो !
इसलिये मैं नित तुम्हारी भूल सहता जा रहा हूं
कोप ज्वाला से तुम्हारी दग्ध होकर भी हमेशा !
एक दिन जागोगे तुम यह बात कहता जा रहा हूं !
क्या करूं प्रतिवाद करके क्या करूं फर्याद करके
तुम मुझे दो रुदन ही पर मैं तुम्हें नव गान दूंगा !
तुम मुझे तूफाँन दो ! पर मैं तुम्हें मुस्कान दूंगा !

धैर्य ने मुझको संवारा, शान्ति ने मुझको दुलारा,
इस लिये हरबार मैंने—प्यार से तुम को पुकारा !
दे रहे मझधार तुम—मैं देरहा तुमको किनारा !
तुम मुझे देते पतन मैं दे रहा तुम को सहारा !
एक दिन सोचोगे खुद तम एक दिन जानोगे खुद तुम !
दो मुझे अपमान पर मैं तो तुम्हें सन्मान दूंगा
तुम मुझे तूफान दो पर मैं तुम्हें मुस्कान दूंगा !

दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये !

दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये !
मिटने पर कोई मांगेगा प्यार नहीं !

जीवन की कटुता से घुट कर मरना क्या !
बाधाओं से डर कर आहें भरना क्या !
लेने की इच्छा से जीना-जीना क्या
याचित अमृत पीकर भी है पीना क्या !
देकर जो जीता आया है दुनिया में
उसकी हो सकती प्रिय ! हरगिज हार नहीं !
दुनिया को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये !
मिटने पर कोई मांगेगा प्यार नहीं !

[मैं गीत सुनाता जाऊंगा]

बिन बोये धरती से कब कुछ मिलता है!
फूल बिना पानी सींचे कब खिलता है!
इच्छित सामग्री श्रम से ही मिलती है!
कहीं मांगने पर मिट्टी भी मिलती है!
घृणा रहा करती है संग लाचारों के,
प्रिये! किन्तु तुम तो इतनी लाचार नहीं!
दुनियां को जी भर कर दे दे प्यार प्रिये!
मिटने पर कोई मांगेगा प्यार नहीं!

सुखसे या दुखसे जैसे भी जीना है!
क्या लम्बा है दो दिन का तो जीना है!
क्या होगा आंसू पीकर के जी लेगें,
अमृत दे दुनियां को खुद विष पीलेंगे
दुनिया की खुशियाली भी तो अपनी है!
मत भूलो जीवन कोई व्यापार नही!
दुनिया को जो भर कर दे दे प्यार प्रिये,
मिटने पर कोई मांगेगा प्यार नही!

प्राप्ति

तन, मन औ' मस्तिष्क तीन धन मैंने पाये हैं अनमोल !
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया में साथी बोल !

पन्थ मिला, पाथेय मिला, क्या हुआ मिला उत्कर्ष नहीं !
सब कुछ, अपने आप मिल चले यह तो कोई तर्क नहीं !
हाथ मिले पुरुषार्थ हेतु गतिमय होने को मिला भूगोल !
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया में साथी बोल !

भूमि मिल गई, बीज मिल गये और मिले बादल प्यारे !
ज्योतिदान कर रही रश्मियां, सुधादान ये शशि-तारे !
सब कुछ अपने आप मिल रहा बिन मांगे मुझको बिनमोल !
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया में साथी बोल !

पंचतत्व के प्रखर पिण्ड में क्या है वह जो भरा नहीं !
लेकिन उसको मिला कहां कुछ जिसने उसको वरा नहीं !
मैंने तो मस्तिष्क कलश में इसका पदजल लिया है घोल !
पाने को रह गया शेष क्या, अब दुनिया में साथी बोल !

मैं

जग फेर रहा है विध्वंसों की माला,
मैं निर्माणों के मन्त्र पढ़ा करता हूं!
जग भुला रहा पागल हो जिन तत्वों को,
मैं उन तत्वों के यन्त्र गढ़ा करता हूं!

मैं महासृजन की चाह लिये फिरता हूं,
मेरे आगे बौना है महाउदय भी!
मैं सृष्टा हूं, सैनिक हूं और श्रमिक भी,
मुट्ठी में मेरे जग की अजय-विजय भी!

मेरे इङ्गित पर चलो अगर जीना है!
पीना है यदि जीवन भर सुख का प्याला!
सैनिक बनकर नित चलो अचंचल बन कर!
मैं सेनापति हू, आगे चलने वाला!

मुझ मे बल पाती श्रद्धा सदा सुहापन,
मैं पथ दिखलाता वही कि जो हो पावन
मैं उन तत्वो के सुमन खिलाता चलता,
जो चुने उन्हें बन जाये जग-मन-भावन

मैं मौलिक हूं, कोई अनुवाद नहीं हूं!
मैंने सीखा है अपने दम पर उठना!
है कौन जो मेरे पथ से मुझे हटादे!
मैं नहीं जानता क्या होता है झुकना!

बारूद बनाने वालों का दल-बल भी
मेरी निष्ठा से बड़ा नहीं हो सकता!
जो हिंसा से इतिहास बिगाड़ा करता!
वह मेरे सम्मुख खड़ा नहीं हो सकता!

मैं महाउदय का ओज लिये चलता हूं!
दुश्मन उनका जो पन्थ बीच रखते हैं!
पिटते रहते है जो मिथ्या के हाथों!
जब-जब भी वे उठते हैं तो पिटते हैं!

अमरत्व नहीं मिल सकता हरगिज उनको!
इस पद के अधिकारी होते है त्यागी!
त्यागी को कब प्राणों की होती परवाह!
उसकी आंखें नित रहती जगी-जागी!

मैं हूं विभ्राट जनों के पथ का पन्थी!
शोलों को शबनम बना के चलने वाला!
है कौन जो तुम में मेरी व्यथा समझे!
मैं हूं जग की तस्वीर बदलने वाला!

मैं गीत सुनाता जाऊंगा]

मैं प्रतिपल गाता हूं वह राग सुहाना
सुनकर जिसको जीवन करवट लेता है
उद्दाम रश्मियों के घूंघट उठते है
अंगड़ाई जिससे हर पनघट लेता है

मैं लहरों सा तट से टकराता चलता !
झरनों सा नित मुस्काता-गाता चलता !
भूतल ज्यों नित अन्तर में दर्द छुपाये
पद-पद पर नित नव-दीप जलाता चलता !

गुरुता-लघुता के भेद-भाव से हट कर
मैंने सीखा है प्रतिपल चलते जाना !
तूफान-बवण्डर उठे सहस्रों लेकिन
अक्षय-दीपक ज्यों सीखा जलते जाना !

मैं प्रतिभापुञ्ज किरण-पथ का अनुगामी !
पाथेय प्यार का लेकर चलने वाला !
कोलाहलमय इस श्रम से भरे जगत मे
प्रतिपल गिर-गिर हर बार सम्भलने वाला !

मैं कालिन्दी का तीर, कृष्ण का गोकुल
भगवान राम का पावन-धाम तपोवन !
मैं बोधि-वृक्ष गौतम के जय का साक्षी
मैं पाञ्चजन्य की ध्वनि का प्रखर प्रयोजन !

मेरे 'मैं' मे ब्रह्माण्ड मुखर हो गाता
हर तत्व विश्व का अपनी सीख सुनाता
पावन भर बनती कल्मष काव्य की मेरी
उन्नत होता वह इसे समझ बुध पाता

मेरा 'मैं' 'तू' की पीड़ा देख न सकता
इसलिये कर रहा बार-बार आवाहन
आ ! 'मैं' की वैतरणी में मन को धोले
चिर-निद्रा-वश हो सो जायेगा दाहन

फैलाकर चलना सीखो सदा भुजायें !
अनुमोदन करो सुबह के सम्बोधन का !
मैं शंखध्वनि करता तुम करो निराजन !
अर्चन हो श्रद्धा से झुके जन-जन का !

आंगन-आंगन तुम्हें पुकारे !

आंगन-आंगन तुम्हें पुकारे उठ ओ जीवन-धाम रे !
हर आनन पर नाम तुम्हारा हो, ऐसे कर काम रे !
उठ ओ जीवन-धाम रे !

नायक बन तू बनने वाले नये-नये इतिहास का
आने वाला युग समझेगा फूल तुम्हें मधुमास का
जब तक जीवन जी बन कर तू निर्बल का बल राम रे !
उठ ओ जीवन-धाम रे !

गले लगा पहले आगे आ, व्याकुल हर मजदूर को
राह दिखाना काम है तेरा जगके हर मजबूर को
ये दुनिया है एक अयोध्या, तू है इसका राम रे।
उठ ओ जीवनधाम रे !

तुम्हें पुकारे लाख-लाख ललनाओं का सिन्दूर रे !
अपना तन-मन वार के उनका दुखड़ा कर तू दूर रे।
बसा उजड़ती अभिलाषाओं के तू पावन ग्राम रे !
उठ ओ जीवन-धाम रे !

नाम हमारा है दुनिया की जीत के पहरेदारों में !

नाम हमारा है दुनिया की जीत के पहरेदारों में !
हमको घायल कर दे बल है इतना किसके वारों में ?

चोरों-कमजोरों की बातें हमको मिटा न पायेंगी
गीत हमारे सारी दुनिया की सन्तानें गायेंगी
दर्जा पहला रहा हमारा साहस के हकदारों में !
हमको घायल करदे बल है इतना किसके वारों में ?

प्रीत की मंजिल हमने दी है, दुनिया भूल न पायेगी
भूल जो जायेगी दुनिया तो हरगिज संवर न पायेगी
पढ़लो अगर यकीन न हो तो लिखा यह चांद-सितारों में !
हमको घायल करदे बल है इतना किसके वारों में ?

सूरज हमने जग को सौंपा, हम किरणों के दाता हैं !
कल भी कल लेगा हम से, हम कल के चिर-निर्माता हैं !
भारत-माता, जगती माता, हम हैं उसके दुलारों में !
हमको घायल करदे बल है इतना किसके वारों में ?

सपूत।

तू उठ स्वदेश के सपूत होनहार बन !
होनहार बन सबल, मनुज-महान बन !

न भूल जिन्दगी है यह स्वदेश के लिये
कदम बढ़ा—सबल, सतत स्वदेश के लिये
अनन्त काल तक चले तू वह निशान बन !
होनहार बन सबल, मनुज-महान बन !

बना जो अपने हमसफर हैं उनकी टोलियां
सुना समस्त विश्व को विजय की बोलियां
तू अद्वितीय वीरता का नव-विहान बन !
होनहार बन सबल, मनुज-महान बन !

जो पेट भरके चल बसे वह आदमी नहीं
किसीका कुछ न कर सके वह आदमी नहीं
वे आदमी थे जो कि विश्व के लिये जिये
जिन्होंने विश्व के लिये जहर के घट पिये
तू उन महान व्यक्तियों का नव-प्रमाण बन
होनहार बन सबल, मनुज-महान बन।

जबतक मैं जिन्दा हूं जीऊंगा प्यार से !

जब तक मैं जिन्दा हूं, जीऊंगा प्यार से !
क्योंकि मैं परिचित हूं अपने अधिकार से !

दुनिया में आंधी भी है तूफान भी
क्रन्दन, रुदन भी है लेकिन मुस्कान भी
अनजानापन है लेकिन पहचान भी
है लाखों अभिशाप तो सौ वरदान भी
व्यापकता ने भरी विविधता से झोली
बचा हूं फिर भी मैं उनके उद्गार से !
क्योंकि मैं परिचित हूं अपने अधिकार से !

हारे लाखों बार विफलता आई है
लेकिन उनने सदा विफलता पाई है
दृष्टिकोण की धरा न जिनकी अपनी है
उन्होंने सौ-सौ बार विफलता पाई है
मैंने युद्ध मेरा भी उनने ठाना है
किन्तु बचा हूं मैं उनके प्रतिकार से !
क्योंकि मैं परिचित हूं, अपने अधिकार से !

जब-जब मन व्याकुल होता है

जब-जब मन व्याकुल होता है तब-तब मैं कलम उठाता हूं !
विश्वास जगाकर जीने का, दो गीत मिलन के गाता हूं !

भोलेपन-वश कुछ दुर्बलता
मन की मुस्कान चुरा लेती
असफलता पीछे से आकर
भ्रम का तूफान उठा देती
तब-तब होकर कुछ खिसियाना, मैं द्वार अहम के जाता हूं !
जब-जब मन व्याकुल होता है, तब-तब मैं कलम उठाता हूं !

सुन अहम भरे मेरे नारे !
दुर्बलता थर्राने लगती
असफलता फिर न आने की
कसमें रो-रो खाने लगती
तब-तब स्थिर होकर जग को मैं अपने उद्गार सुनाता हूं !
जब-जब मन व्याकुल होता है, तब-तब मैं कलम उठाता हूं !

आदर्श के आंगन में जन्मा
आदर्श को कैसे ठुकराऊं ?
कैसे यथार्थ की कटुता में
ये भोला मनले मुस्काऊं ?
वह साम्यवाद यह नग्नवाद, मैं सत्य रहा ही चाहता हूं !
जब-जब मन व्याकुल होता है तब-तब मैं कलम उठाता हूं !

विश्वास नहीं जिसका खुद पर

विश्वास नहीं जिसका खुद पर इतिहास बना क्या पायेगा !
मन पर न जिसे काबू अपने मधुमास बुला क्या पायेगा !

अस्थिरता कभी सफलता के बीजों को पाल नहीं सकती
निष्ठुरता प्यार के सांचे में जीवन को ढाल नहीं सकती
बेताला राग किसी के भी मन को कब लगा सुहाना है !
कीमत उसकी कब हुई न जिसका होता एक ठिकाना है !
पहचान नहीं जिसको जल से, वह प्यास बुझा क्या पायेगा !
विश्वास नहीं जिसका खुद पर इतिहास बना क्या पायेगा !

विश्वास का मौसम पाने पर आता, उपवन मुस्काता है
विश्वास हिला जिसका, पतझड़ उसके जीवन में आता है
पतझड़ ही नहीं पतझड़ों भी नीचे वह गिरता जाता है
जो लुभा न पाया धरती को आकाश लुभा क्या पायेगा !
विश्वास नहीं जिसका खुद पर इतिहास बना क्या पायेगा !
मन पर न जिसे काबू अपने मधुमास बुला क्या पायेगा !

होली के रंगों से

होली के रंगों से हृदय जो रंग न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

कब ले सकोगे तुम यहाँ जीवन की मस्तिया
यूं रौंदते चलोगे यदि जीवन की बस्तियां
देखोगे फूल, मूल पर अंगार धरोगे
तो किस तरह खुशी से आँखें चार करोगे

मन तक जो वन बसन्त को बुला न पाओगे
तो क्या हंसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

बनती रहेगी यूं ही उमङ्गों की जवानियां
बनती रहेगी रोज. यो अन्ती कहानियां
कदमों को थिरकने का मजा आन पायेगा
तुम देखते रहोगे फागुन लौट जायेगा

बेहाल फिर गुलाल तुम उडा न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

प्यालों में दिलों के नया रंग घोल उछालो
हर मित्र के गले में हार जीत का डालो
सब कुछ समझ के भी न यूं अनजान बनो तुम
शैतान मत बनो अरे! इन्सान बनो तुम

इस बात को दिल में जो तुम बसा न पाओगे
तो क्या हंसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

होली मनाने के लिये प्रह्लाद चाहिये
मृदुनाद बस न वाद न विवाद चाहिये
पलते जो पाप में यह उनका पर्व नहीं है
प्राणों में जिनके पुण्य का कुछ गर्व नहीं है।

कण-कण को जमी के अगर हंसा न पाओगे
तो क्या हंसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे !

आजाद देश है मगर आबाद क्यूं नही
पाई है बांसुरी तो उसमें नाद क्यूं नही
है रंग पास किन्तु उमंगें मरी हुई
हर अङ्ग की बिन संग के आंगें भरी हुई

वदरंग तरंगों से अंग भर न पाओगे
तो क्या हंसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

हर कश्ति खेवये के हाथों डूबी जा रही
हर वस्ति वासिन्दों के हाथो लूटी जा रही
हर हंसमुखी राधा का सजन उससे दूर है
हर दिल दुखी यूं है कि उसका सजन दूर है

हर प्रान को सजन सदन दिला न पाओगे
तो क्या हसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

हैरान हसरतों को उठो तुम गुलाल दो
नादान वेदर्दों को तुम नये खयाल दो
फेंको न जाल वह कि जिन्दगी तड़प उठे
हर जिन्दगी पे मौत का शोला भड़क उठे

हर हाथ को फागुन का फूल दे न पाओगे
तो क्या हंसोगे तुम क्या तुम होली मनाओगे

मेरी धरती

मेरी धरती, मेरा सूरज मेरे चांद सितारे
इतना सब कुछ पाकर क्यों मैं भटकूं द्वारे-द्वारे !

हवा हांकती है मेरा रथ मौसम पथ दिखलाता
आसमान अरमान सजाने उतर जमीं पर आता
फूल महकाते नाम ले मेरा प्रति दिन प्यारे-प्यारे
इतना सब कुछ पाकर क्यों मैं भटकूं द्वारे-द्वारे

उन्मादी बादल भी मेरी सेवा कर जाता है
सागर भी जब जी चाहता तब मोती दे जाता है
बिजली तक ने दासी बन नित मेरे काम संवारे
इतना सब कुछ पाकर क्यों मैं भटकूं द्वारे-द्वारे

पर्वत ने भी दिल देकर मुझ को समृद्ध किया
तृण-तृण तक ने जुट मेरे आंगन को सिद्ध किया
कंकर-कंकर ने शंकर बन मेरे मान उबारे
इतना सब कुछ पाकर क्यों मैं भटकूं द्वारे-द्वारे

समान गान

समान खान, पान हो
समान गान, ध्यान हो
समान आन बांन हो

समान हो वसन समान लाभ का प्रमाण हो
समानता - समानता की धुन युगों से लग रही
इस पर भी क्यों असमानता यहाँ वहाँ झलक रही
समानता के चाहको ! समानता के साधको !
समानता के वास्ते समान हो वखान हो
समान हो वसन समान लाभ का प्रमाण हो

समान खान - पान हो
समान गान ध्यान हो
समान आन बांन हो

महल में बैठकर समानता की बात मत करो
अपने घर में दिन, पराये घर में रात मत करो
सामान सब को एक - सा मिले यही विधान हो
न धर्म हो अलग, अलग न वेद हो कुरान हो
समान हो वसन समान लाभ का प्रमाण हो

समान खान - पान हो
समान. गान ध्यान हो
समान आन बांन हो

कविता सुहागिनी

दिवस की धूप हो या हो निशा की चाँदनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

अमा हो या हो पूर्णिमा, सावन हो या तपन
सबको किया है इसने प्यार से सदा वरण
मुस्का उठी सान्निध्य पाके इसका दामिनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

सुमन को शीश का इसीने स्थान दिया है
कांटों को इसीने जगत का ज्ञान दिया है
संवरा इसीसे राग तो संवरी है रागिनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

नयनों को जवानी मिली इसीके प्यार से
चरणों को रवानी मिली इसीके प्यार से
देती ये शक्ति सबको बन सुधा सुवासिनी
सबको दुलारती है ये कविता सुहागिनी

मैं निराकरण

मैं निराकरण बनूंगा मैं निराकरण
सांसों को मेरी दे रहा आधार जागरण

मैं बंध नहीं सकता किसी के मोह जाल में
है सत्य क्या यह बात है मेरे खयाल मे
लिखना है मुझ को गीत वह दुनिया के भाल में
जो गीत गूंजता है सत्य के सवाल में
कहूंगा मैं न वह हो जिससे दूर आचरण
न कहना तुम भी वह न पास जिसके आचरण
मैं निराकरण बनूंगा, मैं निराकरण

मैं सन्तुलन के द्वार से तुझे पुकारता
तू संहरन की दृष्टि से मुझे निहारता
वरण के नाम पर हरण का छोड़ दे चलन
तुझे तुम्हारे प्राण का नयन पुकारता
न अब गिरा सकोगे सत पे भ्रमका आवरण
मैं भेदता रहूंगा सब तुम्हारे आवरण
मैं निराकरण बनूंगा, मैं निराकरण
सांसों को मेरी दे रहा आधार जागरण

मुक्तक-माला

ढूंढता फिरता कोई भगवान को
ढूंढता फिरता कोई धनवान को
किन्तु मैं ईमान जिसके पास हो
ढूंढता फिरता हूं, उस इन्सान को

न कुछ भी राम काम आया
न कुछ घनश्याम काम आया
किया जो काम मैंने नित
वही बस काम, काम आया

सौरा ने यह कहा काम कर काम कर
एक पल के लिये भी न आराम कर
आदमी तू बना काम के वास्ते
करके आराम खुद को न बदनाम कर

आवाज को आवाज देता जा
जिन्दगी को इक नया अन्दाज देता जा
मुस्कुराता झूमता गाता हुआ
हर मुसाफिर को सफर का साज देता जा

न तन अपना मुझे दो तुम
न धन अपना मुझे दो तुम
अगर कुछ दे सको तो
आज मन अपना मुझे दो तुम

मैं गाता हूं इसलिये कि तुम मुझे याद करो
अपनी दुनिया, अपनी चाहत आबाद करो
फरियाद के फन्दे से निकल कर साथी
तुम रहो आजाद, मुझे आजाद करो

किसी नजर में अति उन्नत विज्ञानवान है
किसी नजर में अति उन्नत सम्पतिवान है
बुद्धिमान-गुणवान भी उन्नत होते हैं पर —
सब से उन्नत वह नर है जो धैर्यवान है

पापी नहीं है वे जो रोज चलाते गोली
पापी है वे लोग जो ठगकर भरते झोली
दलबन्दी का जाल फेंक सत्ता हथियाते
वे पापी हैं बड़े जलादो उनकी होली !

मत झुको स्वयं, झुकने वालों के नाम मिटादो
मन-मन जलने वालों के धन-धाम मिटादो
वाणी पर प्रतिबन्ध लगाने वालो को तुम
सुबह नहीं तो इसी दिवस की शाम मिटादो

टूटे हुये दिलों की महफिल में आ गया
आया था मुस्कुराने पर तिलमिला गया
कुछ बात ही थी ऐसी रोना पड़ा मुझे
मैं नाम उसका क्यों लूं जो मुझको रुला गया

दो पत्र

जब से तुम बम्बई गये हो
सूना-सूना लगता है घर
आस पास के लोगबाग
सब रूठ गये हैं।
आने क्या है बात न कोई मिलता-जुलता
रधिया और राजू में
दिल बहला लेती हूं।
पर परसों से राजू भी बीमार हो गया
मनीआर्डर भी अबकी बार
मिला देरी से
दो दिन रधिया ने और मैंने
पानी पीया।
राजू को गुड़ से मूड़ी में भूख मिटाई
घर में तेल बिना
कल जल नहीं पाया दीया।
चीनी चार दिनों से
घर में नहीं ला सकी
नीबू का शरबत रधिया भी नहीं पी सकी
दो महीनों की फीस
नहीं हम दे पाये हैं
अतः स्कूल को राजू अब नहीं जा पाता है।
ज्येष्ठ मास की दुपहरी में
राजू था घूमा
फलतः कै और दस्त साथ ही साथ हो गये।
वैद्य दवा दे चुका
किन्तु कुछ लाभ नहीं है।

कल से और अधिक
तबियत का बुरा रवैया
आज सेन बाबू को दिखलाने लाई थी
छः रुपये इन्जक्सन में ही खर्च हो गये
मिक्स्चर और फीस का अब तक बाकी खर्चा
अग्रिम सप्ताह तक मनीआर्डर नहीं मिला तो
बेबस होकर मुझको करना होगा कर्जा
कर्जे की है बात बुरी
मुश्किल से मिलता
पहले के कर्जे से दम मेरा है घुटता
ब्याज - ब्याज में श्रम का पैसा बह जाता है।
बडी बुरी हालत है
दुखड़ा किसे सुनाऊं
ऐसे में तुम भी तो मुझ से दूर हो गये।
अजगर सी यह रात भयानक मुंह बाये है
और एक दिन खा जायेगी
रक्तहीन हिलते-डुलते मेरे पुतले को
गम केवल इतना है
रधिया राजू छोटे
वर्ना मेरी लाश जमी के नीचे होती।
अधिक तुम्हें क्या लिखूं
राम तुम से भी रूठा
वर्ना हिम्मत के तुम भी पूरे,
कमजोर नहीं हो
बुरा भला लिख डाला
हो तो ध्यान न करना
खत लिखना
खत लिखने में मत देरी करना

खत मिला

खत मिला
पढ़ लिया
दिल को कुछ चैन नहीं
घर की हालत को देख
सोता दिन रैन नही
कल्लू ने आके कहा
तुम्हें भी बुखार है
साहस से काम लो
अब न अधिक देर है।
अचिर में होने वाला
उजला सवेर है
शहरों मे नफरत
आज मुझे होने लगी,
शहरों में आदमियत
देखता हूं रोने लगी
आदमी मशीन का पूर्जा बना हुआ
घूमता यहां - वहां
अचेतन बना हुआ।
बी० ए० की डिग्री का
मूल्य है यहां नही
आदमी को आदमी से
प्यार है यहां नहीं।
ईमान लुट रहा यहाँ
असभ्यता निखर रही
कि रोम - रोम जल रहा
हृदय में आग जल रही।
सिसक - सिसक मनुष्यता

बिगड़ रही, उजड़ रही।
नौकरी की खोज में यहाँ
घूमता हूँ सात दिन हुए
भटक रहा हूँ रात-दिन
खामोश भावना लिये।
बहकाके कोई ले गया था
मुझे फिल्मों में देने काम
काम कर चुका अच्छी तरह
किन्तु मिले नहीं अभी तक दाम।
सरकारी व्यापारी
सभी आफिसों में गया
किसी ने न मुंह खोल कर
बात की जवान से
सट्टे का काम यहां
चलता है जोरों से
'छक्के से पञ्जा' लगाया था
रात को
मैं न जानता था, है—
'ओपन टू क्लोज' क्या
होटल के बहरे ने
बताया था सोच के
भोर हुई कुछ न मिला
रुपया भी चल दिया
चवन्नी पास है
दुअन्नी खत्म हो गई
लिफाफे के वास्ते
दुअन्नी बाकी है
आधे दिन रात के वास्ते।

पिछले दिनों जासूसी
उपन्यास कुछ बेचे थे
फलतः मनीआर्डर भी तुम्हें
पचास का भेजा था
आजकल लिटरेचर बेचता हूं
रवीन्द्र का प्रसाद का
पन्त, निराला, प्रेमचन्द का
राहुल का, यशपाल का
अश्क का, कृष्णचन्द्र का, अब्बास का
सुमन, शील, नागार्जुन का
बड़े दुःख की बात है आजकल
किताबें कोई नहीं पढ़ता है
राहुल की किताबें बिकती हैं बड़ी मुश्किल से
बड़े लोग खरीदते हैं
यशपाल व कृष्णचन्द्र की किताबें बल्कि
स्टूडेन्ट कुछ लेते हैं।
लेते हैं किताब आज
पढ़ लेते पूरी उसे
मूल्य किन्तु हफ्ते दो हफ्ते बाद देते हैं।
इसी तरह हिन्दी की उत्कृष्ट पत्रिकाओं का भी रवैया है
घर-घर में मांग है, आज कल फिल्मी पत्रों की
परसों तक इधर-उधर से
कुछ पैसा इकट्ठा कर पाऊंगा
छः दिन हुए मैं भी पेट भर
खाना नहीं खा सका हूं।
ये दिन हमेशा नहीं रहने के पद्मा,
शहर में स्टेशन के पास एक झोपड़ा बनाया है।

पचास रुपये किसी तरह
इकट्ठे हो पायेंगे
पचास रुपये की मदद देने का वादा
एक मित्र ने किया है
पाते ही मनीआर्डर रवाना हो जाना बम्बई को
तुम सब की जुदाई में कभी दिल फटने लगता है
सोचता हूं, कभी हार्टफेल ही हो जायगा।
जितने दिन जीना है
साथ रह के जीयेंगे
हमें दर्द बेवशी की दीवार तोड़
जिन्दगी की अन्तिम सांस तक नया अफसाना बनाना है।
जो कुछ लिखा है खत में
सोचना - समझना जरा
बहकना नहीं
छलकना नहीं
जानता हूं
आजतक मैं तुम्हें चैन नहीं दे सका
आँसुओं को पीके तुम जिन्दगी काटती हो।
इसमें भी कुछ भाव है
तत्व है, सार है।
सोचता हूं मैं
समझता हूं मैं
तुम आज की नहीं,
आनेवाली पीढ़ी के राह की गहरी
विषभरी
खाइयों को पाटती हो।
बहुत कुछ लिख गया

बहुत कुछ बक गया,
राजू की मां हो तुम
राजू को पालना
भूलना नही
भटकना नहीं
गिला है कुछ जमाने से
तो राजू को संवारना।
सब को दुलार देना
बच्चों को प्यार देना
लौटती डाक से—
तुरत भूलना मत
खत देना।

[ता० ८ अगस्त १९५४ की ये दो पत्र बम्बई के विचित्र उपनगर खार रोड की एक सड़क पर मिले थे।

मैं गीत सुनाता जाऊंगा]

प्यासे मन

प्यासे पनघट ढूंढ रहा अन्यत्र कहाँ
तेरे प्राणो का पनघट तेरे आस-पास
तेरी रग-रग में लहराता है वह सागर
बुझ सकती जिससे भव-भर की उद्दाम प्यास

तेरी परिचर्या हित ही सूर्य-उदय होता
नक्षत्र, चन्द्र सारे नभ में मुस्काते हैं
शायद तुझको यह ज्ञात नही होगा, पंन्छी
तेरे स्वर को ही बार-बार दोहराते हैं।
देखो मधुऋतु का हमजोली कह रहा पवन प्रतिपल-प्रतिक्षण
पहचान तू अपना बल इस क्षण अनुचित है होना यूं उदास
प्यासे मन पनघट ढूंढ रहा अन्यत्र कहाँ—
तेरे प्राणों का पनघट तेरे आस-पास

तेरा पद तल पा भूमि-भूमि कहलाती है
तेरा शुभ स्वर पा गगन-गगन कहलाता है
आश्चर्य न हो कैसे कवि को यह दृश्य देख
जब तू पानी-पानी-पानी चिल्लाता है
यह संज्ञा शून्य दशा तेरी कहीं मृत्यु न बन जाये मेरी
मुस्काओ क्षण भर मुस्काओ आह्वान कर रहा है विनास
प्यासे मन पनघट ढूंढ रहा अन्यत्र कहाँ
तेरे प्राणों का पनघट तेरे आस पास

